द्वितीय अध्याय Chapter-2

गुजरात के आधुनिक हिन्दी काव्य की परिभाषा एवं पृष्ठ भूमि

आधुनिक अर्थात् नया आधुनिक हिन्दी काव्य जो गुजरात का प्रश्रय लेकर विकसित हुआ उसका यद्यपि अपना एक निजी ठोस एवं व्यापक तथा समृद्ध धरातल है तथापि अखिल भारतीय आधुनिक काव्य सर्जना के व्यापक एवं वैविध्यपूर्ण रचना सन्दर्भों से निहायत पृथक भी नहीं कर सकते । वर्तमान सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनैतिक विचारधाराओं विश्वासों एवं परिस्थितियों के अनुरूप अपना वैशिष्ट्य लिए हुए भी गुजरात का आधुनिक हिन्दी काव्य अखिल भारतीय हिन्दी काव्य परम्परा का ही अविच्छिन्न प्रवाह है । यही कारण है कि भारतेन्दुकालीन हिन्दी काव्यधारा की आंचलिक परिस्थितियों एवं समसामयिकता का निरूपण करने वाली काव्य रचनाओं के अतिरिक्त व्यापक राष्ट्रीय धरातलपरक प्रायः सभी प्रवृत्तियों से नारी शिक्षा, निम्न जातियों के उत्थान, सामाजिक सुधार, अंग्रेजी शिक्षा दीक्षा के स्वीकार की मानसिकता, भारत की अतीत संस्कृति की श्रेष्ठता का गान एवं उसकी वर्तमान सन्दर्भ में पुनः प्रतिष्ठा की आवश्यकता अंग्रेजों की राजकीय दासता का भरसक विरोध - हिंसात्मक एवं अहिंसात्मक पूंजीवाद सामंतवाद एवं जमींदारी प्रथा के विरूद्ध किसान आन्दोलन, विकट देश प्रेम, राष्ट्रीय अस्मिता के प्रति जागृति आदि आदि अनेक प्रवृत्तियों से गुजरात भी क्रियान्वित रहा है । स्वामी दयानन्द, राममनोहरराय, एनीबेसन्ट, रामकृष्ण परमहंस, श्री अरविंद आदि आदि कई महामना देश प्रेमी साहित्यकारों की अनेक विध प्रवृत्तियों से गुजरात भी घनिष्ठ रूप में जुड़ा हुआ है । अतः छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नईकविता, अकविता, समांतरकविता, युयुत्सवादी कविता आदि जो दर्जनों वादीय आन्दोलन विशाल उत्तर भारत के काव्येतिहास में अंकित हैं वैसे कोई आन्दोलन स्पष्टतया एवं अभिनिर्वरातया गुजरात में निर्मित गुजराती काव्य एवं हिन्दी काव्य में दोनों में नजर नहीं आते । किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि यहाँ के साहित्यकार उन सबसे निहायत अपरिचित थे । वास्तव में विशाल भूभागीय हिन्दी काव्य धारा के सार्वदेशीय एवं मानवीय सन्दर्भों से यही काव्य प्रवृत्तियाँ एवं उसके विविध रूपों से गुजरात के सर्जक भलीभाँति अवगत थे और आज भी कार्यरत है ।

आधुनिकता की परिभाषा :

आधुनिकता समय की चुनौतियों को स्वीकार करने और सत्य को ग्रहण करने की एक यथार्थवादी दृष्टि है । आधुनिकता जहाँ वर्तमान से सम्बन्धित है वहाँ एक विचार अथवा जीवन दृष्टि भी है । कई विद्वानों ने इसकी अलग-अलग परिभाषाएँ दी हैं ।

तिवारीजी के मतानुसार "आधुनिकता का सम्बन्ध हमारे उन अनुभवों से हैं जिन्हें हम वैज्ञानिक – औद्योगिक सभ्यता के अनुभव कह सकते हैं[1]।" जबकि डॉ० नरेन्द्रमोहन मानते हैं कि "आधुनिकता एक प्रश्नानुकूल मानसिकता है जो हर बंधी-बंधायी व्यवस्था या मर्यादा या धारणा को तोड़ती है ।[2] दूसरी ओर से देखें तो "आधुनिकता वास्तव में देश-काल के बोध का परिचायक है, – अपनी प्रकृति में आधुनिकता मानव प्रगति द्वारा जोड़े गये जीवन के नये अर्थ और नये परिवेश की स्वीकृति है ।"[3] माथुर के मतानुसार "आधुनिकता परिवर्तित भाव बोध की वह स्थिति है जिसका प्रादुर्भाव यांत्रिक तथा वैज्ञानिक विकास क्रम के वर्तमान बिन्दु पर आकर हुआ है ।"[4] "आधुनिक" की अवधारणा के बारे में चिंतन से यह प्रतीत होता है कि यह भावबोध करने की ही एक प्रक्रिया है । आधुनिकता बोध के विकास में प्रगतिशील वैज्ञानिक चिन्तन और यथार्थवादी जीवन-दृष्टि का विशिष्ठ योगदान रहा है ।

आधुनिकता वस्तुतः मानवीय प्रगति की सूचना देती है तथा नये परिवेश को स्वीकार करके चलती है ।[5] वह एक ऐसी शक्ति है जो मानव को शक्ति प्रदान करती है । वह मानव के प्रतिक्षण के विकास के प्रति विशेष आस्थावान है ।

आधुनिकता एक दृष्टि है, अनुभूति है जो वर्तमान को सतर्कता से भोगने के लिए शक्ति एवं सामर्थ्य देती है तथा जीने की नई चेतना देती है । आधुनिकता अपने में एक अलग महत्व रखती है, उसकी पुरातननिरपेक्ष व्याख्या ही उसे सही रूप में समझाना है ।

"आधुनिकता एक युग विशेष का भाव है ।"[6] "आधुनिकता का मूलाधार मानवतावादी दृष्टि है ।"[7]

1- विश्वनाथ प्रसाद तिवारी – नये साहित्य का तर्क-शास्त्री – पृ० 54
2- डॉ० नरेन्द्र मोहन – आधुनिकता और समकालीन रचना संदर्भ – पृ० 18, 19
3- लक्ष्मीकांत वर्मा – नयी कविता के प्रतिमान – पृ० 248
4- गिरिजा कुमार माथुर – नयी कविता सीमा और सम्भावनायें – पृ० 106
5- डॉ० हरिचरण शर्मा – नयी कविता – नये धरातल – पृ० 19
6- डॉ० हरिचरण शर्मा – नयी कविता – नये धरातल – पृ० 29
7- डॉ० हरिचरण शर्मा – नयी कविता – अंक 7 – – पृ० 67

"आधुनिकता का वास्तविक अर्थ विगत सांस्कृतिक मूल्यों को अपने अन्दर समेटकर मानव की वर्तमान स्थिति और उसके भविष्य विषयक दायित्व की सक्रियता और चेतनता को स्वीकार करना है । अनुभूति और संवेदना का यह नयापन आधुनिकता का ही एक अंग है ।"[1] आधुनिकता एक कटु सत्य है और वह आस्थापरक है । "आधुनिकता - उस भविष्य के जन्म की पीड़ा भी है जो अभी जन्म नहीं ले सकता है । यह संवेदन-शीलता, सहिष्णुता, अजन्मे के प्रति विवेक और उसकी तीखी व्यंजना, उसके तीखे व्यंगों के बीच भी अन्वेषण और पुनरन्वेषणा की समस्या प्रक्रिया, भौतिक पदार्थ को भोगने की क्षमता और वर्तमान और भविष्य के बीच निष्काषित जैसी मनःस्थिति आधुनिकता के अर्थ संदर्भ है ।"[2] आधुनिकता जड़ की स्थिति न होकर परिवर्तन एवं विकास को परिलक्षित करती है तथा उसकी प्रकृति गत्यात्मक है । आधुनिकता का आरम्भ निजत्व का अहसास है । सच्ची आधुनिकता परम्परा के विरोध में नहीं अपितु परम्परा को वर्तमान की कसौटी पर जांचने, परखने में है । जब समय के साथ बहुत सी वस्तुएँ अपना अर्थ खो देती हैं तब आधुनिकता समयानुरूप उसमें नये अर्थ को प्रतिष्ठित करती है, क्योंकि आधुनिकता का आधार यथार्थवाद है । यह तो एक सोचने और जीने का तरीका है । आधुनिकता एक स्वभाव, संस्कार - प्रक्रिया या दृष्टि-भंगी है । डॉ० नगेन्द्र ने "आधुनिक" शब्द का प्रयोग मुख्यतः तीन अर्थों में माना है । एक अर्थ समय - सापेक्ष है, जिसके अनुसार आधुनिक एक विशेष कालावधि का द्योतक है । दूसरा अर्थ विचारपरक है, जिसके अनुसार आधुनिक एक विशेष कालावधि का द्योतक है । और तीसरे, आज के सीमित संदर्भ में आधुनिक का एक संकुचित अर्थ समसामयिक भी है ।"[3]

जबकि आधुनिक काव्य के सशक्त हस्ताक्षर गुप्तजी के अनुसार "आधुनिकता अपने सही अर्थ में उस विवेकपूर्ण दृष्टिकोण से उपजती है, जो व्यक्ति को वास्तविकता, युग-बोध प्रदान करने के साथ-साथ अधिक दायित्वशील, सक्रिय और मानवीय बनाता है ।"[4]

1- डॉ० हरिचरण शर्मा - नयी कविता : नये धरातल - पृ० 20

2- डॉ० हरिचरण शर्मा - नयी कविता : नये धरातल - पृ० 23

3- डॉ० नगेन्द्र - आलोचना की आस्था - पृ० 29

4- डॉ० जगदीश गुप्त - नई कविता - अंक 7

डॉ0 कुमार ने भी आधुनिकता के अन्तर्गत पाश्चात्यीकरण, शहरीकरण, परम्पराभंजन, वैज्ञानिक रुचि, नई नैतिकता आदि अनेकानेक प्रवृत्तियों का समाहार माना है ।[1] इसी बात का समर्थन करते हुए वर्माजी कहते हैं कि "आधुनिकता केवल कालगत भाव में नहीं, वरन् चिंतन-विधि में, दृष्टिकोण में, विवेक में, जीवन की व्याख्या में और ऐतिहासिक दायित्व में, आधुनिक इसलिए है कि वह आज के जीवन सत्य को आज के ही संदर्भ में देखने का प्रयास करता है । उसके लिए न परम्परा की रूढ़ि है और न छायावाद का मिशन । उसकी दृष्टि अन्वेषण की है, परीक्षण की है । तर्कगत अवलोकन और उसके आधार पर सत्यापन और एक निष्कर्ष तक पहुँचने की है ।"[2]

डॉ0 चतुर्वेदी के मत से "आधुनिकता इतिहास की सक्षम और सचेतन प्रतीति है और उन इतिहास चक्र को दुहराने की चेष्टा है इसी को वर्तमान में भविष्य का बलात् आवाहन कहा गया है ।"[3]

डॉ0 इन्द्रनाथ मदान ने आधुनिकता के समस्यात्मक सन्दर्भों को प्रश्न चिन्ह की निरन्तरता, वैज्ञानिक दृष्टि एवं प्रक्रिया कहकर उसके स्वरूप व आयाम का आकलन किया है । जैसे "आधुनिकता एक प्रक्रिया होने के कारण एक से अधिक दौरों से गुजरती है और आज भी यह जारी है । इसलिए इसके किसी एक दौर

1- आधुनिक हिन्दी साहित्य : "आधुनिकता" शीर्षक निबंध - डॉ0 कुमार विमल

2- लक्ष्मीकान्त वर्मा - नयी कविता के प्रतिमान - पृ0 64

3- नयी कविता - डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी - 7

पर अंगुली रखकर यह कहना कठिन है कि आधुनिकता यह है ।"[1]

डॉ0 चतुर्वेदी ने अलग अंदाज में इसकी परिभाषा दी है – "आधुनिकता एक मनोवृत्ति है जो स्थितियों में प्रतिफलित होती है । विकासशील संस्कृति के तत्वों के अनुरूप अपने आप को परिष्कृत करते चलना ही आधुनिकता का प्रथम लक्षण है । इस दृष्टि से यह एक गत्यात्मक तत्व है और भविष्य में प्रक्षिप्त दृष्टि ।"[2]

आधुनिकता वह प्रक्रिया है जो अन्ध विश्वास से बाहर निकलने की प्रक्रिया है जो नैतिकता में उदारता की प्रक्रिया, जो बुद्धिवादी बनने की प्रक्रिया, जो धर्म के सही रूप को पहचानने की प्रक्रिया है ।

गुजरात की आधुनिक हिन्दी कविता को प्रभावित करने वाली प्रमुख काव्य प्रवृत्तियों में हम निम्नलिखित काव्य चरणों का उल्लेख कर सकते हैं ।

आधुनिक कविता अलग अलग प्रवृत्तियाँ लिये, अलग अंदाज में वैविध्यसभर नामों का जामा पहनकर हमारे सम्मुख प्रस्तुत है । छायावादी काव्यों में हमें ज्यादातर श्रृंगारी एवं कल्पनाप्रसूत काव्यों की अधिकता मिलती है । छायावादोत्तर काव्य अर्थात् मोहभंग एवं विद्रोह का काव्य । तत्कालीन परिस्थितियों एवं प्रवृत्तियों का प्रभाव हमें उन काव्यों में नजर आता है । वादों एवं नामों के इस आन्दोलन में प्रयोगवाद को ही आज के काव्य से स्वीकृति प्राप्त होने लगी । सन् 1943 ई0 में अज्ञेयजी के "तार सप्तक" में काव्य का नया रूप सामने आया । "प्रयोग" शब्द के अतिरेक के कारण कुछ आलोचकों ने इस नयी काव्य प्रवृत्ति का नाम ही प्रयोगवाद

1- डॉ0 इन्द्रनाथ मदान : आधुनिकता और हिन्दी साहित्य - पृ0 19, 20

2- डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी : हिन्दी नवलेखन - पृ0 227

रख दिया । "सामान्यतया सन् 1950 ई0 के बाद की कविता को प्रयोगवाद से भिन्न करने के लिए नई कविता का नाम दिया जाने लगा है और यह नाम अब स्वीकृत भी हो चुका है ।"[1] आश्चर्य की बात तो यह है कि जिस प्रयोगवाद से आज के काव्य का जन्म माना जाता है वह आज अपने प्राचीन रूप से भिन्न एक नवीन रूप में आसीत है अर्थात् आज का काव्य और प्रयोगवादी काव्य एकदम भिन्न है ! प्रयोगवाद द्वन्द्व और प्रतिक्रिया का काव्य है जबकि आज का काव्य संश्लेषण और सामंजस्य का काव्य है । आज के काव्य की जो नई दिशा खुली है उसमें व्यक्ति की आत्मानुभूति से उद्भूत विवेक ही उसका प्रथम एवं अन्तिम पथदर्शक है ।

आधुनिक काव्य समाज को परिध और व्यक्ति को केन्द्र मानता है । उसका प्राणतत्व आधुनिकता है । यह आधुनिकता की प्रवृत्ति आधुनिक काव्य में बढ़ती हुई हमें नजर आती है ।

आधुनिक काव्य या नई कविता "विचार" को अहमियत देती है किन्तु पुरानी कविता में भावों का पलड़ा भारी है अर्थात् आधुनिक काव्य बौद्धिकता के साथ-साथ वास्तविकता को लिये हुए विकसित हो रहा है । नई कविता के केन्द्र में आज का व्यस्त मनुष्य और उसकी उलझनें हैं ।

आधुनिक काव्य का लक्ष्य है धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक बन्धनों, रूढ़ियों, वर्जनाओं और आरोपित मान्यताओं से मानव की मुक्ति । आज आधुनिक काव्य इस क्रान्ति की दिशा में प्रस्थान कर रहा है ।

"आधुनिक कविता याने वह कविता जो वर्तमान विवेक और फैशन के अतिचर्चित पहलुओं के प्रति विरोध प्रकट करती है और उसके वास्तव में अतिशय भोगैषणा का जो

1- आधुनिक कविता, बहुकोण : खण्ड-3 - पृ0 109

भूखा भैरव – सत्य बैठा है, उसे अभिव्यक्त करती है । उसे तो भावावेग भरा एक द्रोण चाहिए, जो मरण के ऊपर मंडरानेवाले संकल्प-पूण का शब्द – शरसंधान कर सके ।"[1] वह एक शक्ति एवं वास्तविक धरातल लेकर जन्मी है ।" नयी कविता आज की मानव – विशिष्टता से उद्भूत उस लघु मानव के लघु परिवेश की अभिव्यक्ति है, जो एक ओर आज की समस्त तिक्तताओं के बीच वह अपने व्यक्तित्व को भी सुरक्षित रखना चाहती है । वह विशाल मानव प्रवाह में बहने के साथ-साथ अस्तित्व के यथार्थ को भी स्थापित करना चाहते हैं, उसके दायित्व का निर्वाह भी करना चाहता है ।"[2] उसकी विशिष्टता है जीवन के प्रति आस्था । साथ ही उसमें जीवन की पूर्ण स्वीकृति है ।

आधुनिक कविता अपने समाज के ऐतिहासिक सत्यों से प्रेरित कविता है । वह कोई वाद नहीं है, जो अपने ही आप में सीमित हो । वास्तव में नई कविता प्रयोगवादी काव्य का एक विकसित रूप है । नए काव्य के प्रकाशन के रूप में बड़े मतभेद हैं । "नये पत्ते" के 1953 ई0 के प्रकाशन के साथ नई कविता का प्रकाशन हुआ ऐसा कई विद्वानों का मानना है । जबकि डॉ0 जगदीश गुप्त और श्रीरामस्वरूप चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित और सन् 1954 में प्रकाशित "नई कविता" में ही सर्व प्रथम अपने सम्पूर्ण प्रतिमानों के साथ वह परिलक्षित हुई ।"[3] किन्तु अन्य कई विद्वानों ने उसके जन्म तो क्या उसके नाम के बारे में और उसके अस्तित्व के बारे में आपत्ति प्रगट की है । यह बात स्पष्ट है कि नयी कविता की प्रवृत्तियों के बीच सन् 1900 से ही मिलते हैं । "सन् 1950 से नयी कविता का प्रारम्भ न मानकर पल्लवन मानना चाहिये । कारण प्रयोगों की भूमिका को पार करती हुई नयी कविता 1950 में तो पूर्णतः पल्लवित होकर सामने आ गई थी ।"[4] उसका सूत्रपात एक विशिष्ट दृष्टि और उद्देश्य को लेकर हुआ था । वह प्रगतिवाद और प्रयोगवाद दोनों के लिए सामान्य भूमि के रूप में प्राप्त हुई । उसमें कवि को माध्यम बनाकर प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद दोनों ने अपने वैशिष्ट्यपूर्ण गुणों को आधुनिक

1- डॉ0 जीवन प्रकाश जोशी – कविता की पहचान – पृ0 48
2- डॉ0 कृष्णलाल हंस – हिन्दी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – पृ0 562
3- डॉ0 कृष्णलाल हंस – हिन्दी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – पृ0 561
4- डॉ0 हरिशंकर शर्मा – नयी कविता : नये धरातल – पृ0 5

कविता की भूमि के रूप में निहित कर दिया । सामाजिक दृष्टि, लोक संस्पर्श से प्रभावित काव्य-शिल्प, निराशा - पराजय के भीतर भी उत्साहमयी दृष्टि, लोक जीवनानुभूति और प्रगतिवाद की उपलब्धियाँ व्यक्तित्व का माध्यम पाकर नयी कविता में अधिक खिल उठें । जबकि संवेदनाओं, व्यथाओं, मुक्त साहचर्य की प्रतीतियों, क्षण-बोध, अन्तर्मन की अदृश्य शक्तियाँ, नये बिम्ब, प्रतीक, उपमान, छन्द से मुक्त शिल्प की छवि को लेकर प्रयोगवाद भी नयी कविता की भूमि में विलीन हो गया ।

आधुनिक कविता में हमें एक स्वस्थ दृष्टि मिलती है । उसने अपना मुहावरा पा लिया है और अनेक वाद-प्रवादों के बीच से गुजरती हुई वह एक ऐसे धरातल पर आकर टिक गई है जहाँ उसकी स्थिति सुदृढ़ और उपलब्धियों की माँग करने लगी है । यह बात भी उतनी ही सत्य है कि नयी कविता के विरोधी अधिक होते हुए भी उसने आज साहित्य में अपना सुरक्षित स्थान बना लिया है किन्तु आज उसके जितने प्रशंसक हैं, चाहक हैं, पाठक हैं, आलोचक हैं उतने ही विरोधी भी है । इससे इन्कार नहीं किया जा सकता ।

आधुनिक कविता हमें पुराने ढंग से दूर एक नवीन रूप की ओर आकृष्ट करती है । उसमें न छन्दों का महत्व है, न अलंकारों का । इसके विषय भी पुरानी परम्परा से दूर नाविन्य से भरे पड़े हैं । शायद इसी कारण से उसको अपने अस्तित्व को बनाएं रखने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है ।

"नयी कविता मानवतावादी कविता है, परन्तु उसकी दृष्टि यथार्थवादी है । इसलिए उसका मानवतावाद मिथ्या आदर्श की परिकल्पनाओं पर आधारित नहीं है ।"[1] गिरिजा कुमार माथुर का कहना है कि "नयी कविता अर्थात् वह कविता जिसमें शैली शिल्प माध्यमों का प्रयोग हो और दूसरी ओर समाजोन्मुखता पर बल दिया जाय ।" इन कविताओं का तेवर वामपंथी है ।

1- डॉ0 रामदरश मिश्र - हिन्दी कविता - आधुनिक आयाम - पृ0 87

आधुनिक काव्य समकालीन जिन्दगी की असह्य और दमघोंट परिवेश में पशु से भी बदतर जीवन बिताने और अमानवीय स्थितियों को झेलने पर मजबूर मनुष्य और इसके लिए उत्तरदायी शोषण, अन्याय, उत्पीड़न और दमन पर केन्द्रित कविता है । आधुनिक काव्य जिन्दगी की बुनियादी जरूरतों को जुटा पाने में असमर्थ, भूख, बेकारी, गरीबी, बुढ़ापा आदि सवालों से जूझते हुए निम्न मध्यवर्गीय आदमी पर केन्द्रित है ।

नये काव्य में भारतीय जीवन की अधिकांश ठोस चुनौतियाँ, सरोकार और मुद्दे लापता ही मालुम होते हैं । "नयी कविता किसी प्रतिक्रिया से नहीं उपजी है, वह आधुनिक मानस की सहज परिणति है ।"[1] सामाजिक परिस्थिति एवम् अहंकार के बीच पिसता हुआ नवयुवक अतृप्त पिपासा को जन्म देता है । अतृप्त पिपासा विश्ववेदना बनकर आध्यात्मिक रूप से आधुनिक काव्य बनती है अर्थात् न वह किसी प्रतिक्रिया से प्रेरित हो कर काव्य रचना करता है किन्तु आधुनिकता उसे काव्य रचना के लिए मजबूर करती है । परिस्थितियों के अधीन विवश मनुष्य की पुकार क्या आधुनिक काव्य नहीं ?

वास्तविक रूप से देखा जाय तो "नई कविता छायावाद की निरंकुश रामांटिक भावाकुलता और कल्पनाप्रियता, प्रगतिवादी काव्य की एकांगी जीवन दृष्टि एवं स्थूलता एवं प्रयोगवाद की वर्जनाओं और शैल्पिक त्रुटियों का परिष्कार करके यथार्थमूलक जीवन दृष्टि तथा नवीन शिल्प - विधान को लेकर आविर्भूत हुई है ।"[2]

यही कारण है कि "नयी कविता जीवन के एक-एक क्षण को सत्य मानती है और उस सत्य को पूरी हार्दिकता और चेतना से भोगने का समर्थन करती है ।"[3] हमने आगे देखा उस ढंग से नयी कविता जीवन के यथार्थमूलक स्तर पर अपना वैशिष्ट्य लिए हुए अपनी पहचान बनाकर हमारे सन्मुख खड़ी है ।

1- डॉ० जगदीश गुप्त - कवितान्तर - पृ० 32

2- डॉ० विजय द्विवेदी - नयी कविता प्रेरणा एवं प्रयोजन - पृ० 127

3- डॉ० नगेन्द्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास : नयी कविता - पृ० 638

नयी कविता ने मनुष्य जीवन को अपंग और अपाहिज बना देने वाले इन्सानी रिश्तों को विकृत कर देनेवाली शक्तियों की असलियत उघाड़ने, अन्तर्विरोधों, दबावों और कुरूपताओं को पहचानने, जीवन की अनचाही कटुता समाज के सम्मुख नग्न करने, बेबसी, लाचारी तथा बेकारी के चक्रव्यूह में फँसे हुए आज के मानव के अन्तर्विरोधों को उद्घाटित किया है । आधुनिक कवि न चाहते हुए भी मृतवत् जीने को विवश मानवजीवन की कुरूपता में आस्थावान सूर्य की एक किरण का प्यासा है तथा जिन्दगी को सही धरातल पर प्रतिष्ठित करने को प्रयत्नशील है ।

नई कविता की धरती अनुभूति की सच्चाई और बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि की मिट्टी से बनी है । यही कारण है कि नयी कविता मनुष्य को किसी कल्पित सुन्दरता - पवित्रता और मूल्यों के आधार पर नहीं बल्कि उसके भीतर तड़पती - सिसकती वेदनाओं, संवेदनाओं, आँसुओं और पीड़ाओं के आधार पर बड़ा सिद्ध करती है । संक्षिप्त में नयी कविता है लोक यथार्थ की सोंधी, सरस, सुरीली धरती और उसके भीतर अपार - अबाध सर्जना शक्ति से मचलते हुए शब्दों के बीज से पनपता हुआ कैक्टस ।

"लोक सम्पृक्ति नयी कविता की एक खास विशेषता है ।"[1] नयी कविता जिस युग की उपज है वह युग पीड़ा बोध का था । उसमें अस्वीकृति का स्वर है, यातना बोध है किन्तु विद्रोह का उभार नहीं है । उसमें आस्वाद बिम्ब भी यत्र-तत्र मिलते हैं ।

"नयी कविता पर वैज्ञानिक और यान्त्रिक युग का पूर्ण प्रभाव पड़ा है ।"[2]

हमें इसमें एक ओर संस्कृत की तत्सम् शब्दावली मिलती है तो दूसरी ओर अंग्रेजी, अरबी, फारसी के शब्द भी मिलते हैं । इस प्रकार आठवें दशक की कविता में भाषा और शिल्प में बहुत अधिक बदलाव दिखाई देता है ।" भाषा का सुनियोजित संगठन और कसाव इस दशक के कवियों की परिपक्व दृष्टि और सूझ-बूझ का ही परिणाम है ।"[3]

1- डॉ० रामदरश मिश्र - हिन्दी कविता : आधुनिक आयाम - पृ० 100

2- सर्वेश्वर - काठ की घंटियाँ - पृ० 300

3- डॉ० पुष्पलाल सिंह - हिन्दी साहित्य : आठवाँ दशक - पृ० 23

आधुनिक काव्य क्षणों की अनुभूतियों को महत्व देता है क्योंकि वह जानता है कि जीवन क्षण-भंगुर है, क्षणिक स्वप्न है। यही कारण है कि यह अनुभूतिपूर्ण गहरे क्षण या प्रसंग या किसी भी सत्य को उसकी आन्तरिक मार्मिकता के साथ पकड़ लेना चाहती है।

कई विद्वानों का मंतव्य है कि आधुनिक काव्य का साहित्य बहुत सी बौनी, निरर्थक और अनुपयोगी रचनाओं के कूड़े - करकट से भरा हुआ प्रतीत होता है किन्तु वास्तव में विश्वास और आस्था के स्वरों के साथ-साथ ही अनास्था, पीड़ा, पराजय आदि के स्वर भी आधुनिक काव्य में मिलते हैं। उसका विषय-क्षेत्र अपरिमित है।

"नयी कविता में सौन्दर्य की अपेक्षा सत्य का अधिक आग्रह है। भाव-पक्ष की अपेक्षा विचार-पक्ष को महत्व मिला है और इसलिए चिंतन की प्रवृत्ति को अधिक प्रश्रय प्राप्त हुआ है।"[1]

सत्य के विशेष आग्रह के कारण समाज और जीवन के बीच सत् - असत्, सत्य - असत्य, सुन्दर - असुन्दर वगैरह भाव तत्वों को समान रूप से निरूपित किया है। "नयी कविता का लक्ष्य रसानुभूति न होकर मानसिक व्यायाम द्वारा कविता के नये आयामों की खोज है।"[2] रस सिद्धांत की उपेक्षा कर बौद्धिकता की अपेक्षा उन्होंने यहाँ की है। यही कारण है कि "नयी कविता में प्रेम के संयोग - चित्रों की अपेक्षा मिलन की आकांक्षा और सांकेतिक मिलन ही अभिव्यक्ति पा सका है।"[3]

"नयी कविता की एक प्रमुख विशेषता उसकी बौद्धिकता है। इस बौद्धिकता और उसमें पायी जाने वाली परिस्थिति-जन्य खीझ, आक्रोश, कठोरता, उलझन इत्यादि को लेकर प्रायः उनके कवित्व को सन्देह की दृष्टि से देखा जाता है। इस सम्बन्ध में द्रष्टव्य इतना है कि बौद्धिकता आधुनिक युग की अनिवार्यता है।"[4]

1- डॉ0 हरिचरण शर्मा - नयी कविता : नये धरातल - पृ0 153
2- डॉ0 हरिचरण शर्मा - नयी कविता : नये धरातल - पृ0 210
3- डॉ0 हरिचरण शर्मा - नयी कविता : नये धरातल - पृ0 60
4- डॉ0 बैजनाथ सिंहल - नयी कविता : मूल्य मीमांसा- पृ0 71

नयी कविता का दृष्टिकोण उदार मानवतावाद को विकसित करने का है। प्रकृति के प्रति उसका दृष्टिकोण तटस्थ रागात्मक का है। नयी कविता व्यक्ति-मन की प्रतिक्रिया है।[1] अर्थात् व्यक्ति अपने परिवेश के अनुसार सोचता है तो दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि नयी कविता आसपास की परिस्थितियों पर अवलंबित है। क्या यह बात ठीक है?

"आधुनिक कविता पुरानी कविता से अपनी विषय-वस्तु के कारण अलग नहीं है, वह अपनी समग्र संरचना में अलग है।"[2] इसका कारण आधुनिक भाषा है।

नयी कविता कोरी कल्पना-कला को रेत का महल मानती है। उसका यथार्थ सामाजिक एवं व्यक्तिमन का यथार्थ भी है। "नयी कविता "व्योम कुंजो" से उतर कर धरती की उबड़ खाबड़, कोमल पथरीली मिट्टी में सौन्दर्य के उन कणों को तलाश कर रही है जो चमकीले तो हों, किन्तु यथार्थ से सम्पृक्त जीवन के गेसुओं में टंके हो।"[3] वह यथार्थ के धरातल पर खड़ी है। परिणामतः इस कविता में आक्रोश एवं आक्रामकता का स्वर ही प्रबल रूप से है। श्री गिरिजाकुमार माथुर ने यह स्वीकार किया है कि "नयी कविता के रूप में अंत, कथ्य और आत्मानुभूति के निवेदन की ओट में पीड़ा, दार्शनिकता, सूफियाना अंदाज, लाक्षणिक विरोधाभास, अप्रस्तुत विधान अमूर्त और सूक्ति प्रवचनों के एक नए छायावाद ने जन्म लिया।"[4]

किसी भी काव्य का जन्म कुछ खास कारण से होता है अर्थात् हर काव्य का अपना अलग इतिहास होता है। यही कारण है कि असंतुष्ट मनुष्यों की असह्य वेदना की पराकाष्ठा ने नयी कविता के रूप में आकार ग्रहण किया। अतः "अभाव की चेतना काव्य की बड़ी प्रेरक शक्ति है क्योंकि संतोश में जहाँ शांत रहने की प्रवृत्ति

1- गजानन माधव मुक्तिबोध - नयी कविता का आत्म संघर्ष - पृ0 134
2- नन्द किशोर आचार्य - रचना का सच - पृ0 35, 36
3- डॉ0 हरिचरण शर्मा - नयी कविता : नया धरातल - पृ0 49
4- डॉ0 दुर्गाशंकर मिश्र - आधुनिक कविता प्रमुख वाद एवं प्रवृत्तियाँ - पृ0 171

होती है, वहाँ अभाव में पुकारने की ।"[1] कविता भावुक चिन्तन का परिणाम है क्योंकि कविता के सृजन के साथी भावना, चिन्तन एवं भावुकता मानी जाती है। नयी कविता का युग वस्तुतः मानवीय मूल्यों के सर्वाधिक विघटन का युग है। बौद्धिक चेतना से युक्त नया मानव अपनी उपेक्षा, असफलता, वेदना एवं अभाव से त्रस्त होकर कटु हो उठता है। तत्पश्चात् उसके क्षुधित और कुंठित मन - मस्तिष्क की यह कटुता एवं घुटन से उद्भुत नये काव्य का निर्माण शक्य बनता है।

"आधुनिक कविता एक ओर आज के हमारे रागात्मक सम्बन्धों के संगृहित ढाचे को स्थापित करती है और दूसरी ओर राजनीतिक - सामाजिक - आर्थिक शोषण के विरुद्ध मानसिकता को तैयार करने में मदद पहुँचाती है।"[2] यह हमारे जीवन में इस प्रकार रच बस गई है कि हम यह कह सकते हैं कि नयी कविता ही यथार्थ जीवन है। उसके द्वारा ही हमारे पूर्ण व्यक्तित्व को विकसित होने का अवसर मिलता है। वास्तव में "नयी कविता जीवन की कविता होने के नाते उसमें समूचा व्यक्तित्व है।"[3] मानव मन की पीड़ा की सच्ची अभिव्यक्ति हमें नये काव्य में मिलती है। साथ ही अंतरनिहित सत्य को उद्घाटित करने का प्रयास भी हमें नये काव्य में मिलता है।

"नयी कविता में उपमा और रूपक के पश्चात् उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, अपन्हुति, रूपकातिशयोक्ति आदि अलंकारों के प्रयोग मिलते हैं।"[4] नयी कविता की भाषा जन - समुदाय के अत्यंत निकट एवं पारम्परिक भाषा रही है। यहाँ हमें स्वाभाविक रूप से प्रतीक उपमानों एवं बिम्बों का प्रयोग दिखाई देता है। हमें उनके शब्द रूपों में एक सन्तुलित दृष्टिकोण मिलता है।

इस प्रकार नयी कविता के अनेक पहलू है परन्तु उन सबको सामने लाना असंभव है। अतः उसके एक मात्र पहलू एवं कृतित्व पर यदि हम दृष्टि डालें तो ज्ञात होता

1- डॉ० नगेन्द्र - आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ - पृ० 61

2- कृपाशंकर सिंह - आधुनिक आलोचना बनाम शैली विज्ञान - पृ० 22

3- ओमप्रकाश शर्मा - आधुनिक कविता - पृ० 176

4- डॉ० हरिप्रसाद पाण्डेय - नई कविता की भाषा - काव्य - शैलीय सन्दर्भ में - पृ० 114

है नये सशक्त प्रतीकों के माध्यम से प्राणहीन रूढ़िगत जर्जर संस्कारों का ध्वंस ।
"नयी जीवन दृष्टि का विकास, उपेक्षित का मानवीय धरातल पर स्वीकार, मानवीयता की परिधि का विस्तार, शब्दों-अर्थों को नया संस्कारदान, वास्तविकता को सीधे सामने ब जाकर ग्रहण करने, उससे टकराने और जूझने का संकल्प, अजर्जर प्राचीन तत्त्वों को नौ परिप्रेक्ष्य में उपलब्ध करने की वृत्ति, नयी संवेदनाओं के अनुरूप नयी शिल्प-शैली का सृजन, राग-बोध के नये स्तरों का उद्घाटन और उसी के साथ-साथ नयी बिम्ब ग्रहण प्रक्रिया का आविर्भाव आदि ऐसे और भी अनेक पहलू है जिनसे नयी कविता के कृतित्व को आंका जा सकता है ।"[1]

आधुनिक कविता का सम्बन्ध पूर्व से ही सामान्य सी दिखनेवाली घटनाओं से रहा है किन्तु घटनाओं की मार्मिकता समझाना ही नयी कविता का काम है । मनुष्य का व्यक्तित्व कविता पर निर्भर है । कविता ने ही मनुष्य को बचाया और जिलाया । "नयी कविता शुद्ध मानवीय भूमि पर फली-फूली है । उसमें ऐसे व्यक्ति के निर्माण की इच्छा नहीं है जो अपरिचित है, बल्कि वह उस व्यक्ति को खोजना चाहती है जो यहीं के मूल्य लेकर यहीं पर जी रहा है ।"[2]

गुजरात के आधुनिक हिन्दी काव्य की पृष्ठभूमि

गुजरात के आधुनिक काव्य की प्रवृत्तियाँ अनेकानेक रूपों में हमारे सन्मुख रही है किन्तु वास्तव में प्रवृत्तियों की जननी तो तत्कालीन परिस्थितियाँ ही होती है । यही कारण है कि आज का आधुनिक काव्य आज के परिस्थितिजन्य बीज का फल ही है । आधुनिकता को प्रतिबिंबित करता हुआ वह एक दर्पण है । यही कारण है कि आधुनिक काव्य की प्रवृत्तियाँ अपनी राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित रही है ।

1- डॉ० जगदीश गुप्त - कवितान्तर - पृ० 83
2- देवराज - नयी कविता - पृ० 70

राजनैतिक पृष्ठभूमि पर यदि हम गौर करें तो उसकी क्रमिक घटनाओं को ध्यान में रखना होगा । इन घटनाओं के दायरे में गुजरात प्रदेश में निर्मित साहित्य में भी कई चढ़ाव-उतार आयें, कई रंग बदले और उन्हीं के निष्कर्ष के रूप में नयी कविता का उदय हुआ ।

"नयी कविता नये शिल्प और उपमानों के प्रयोग के साथ समाजोन्मुखता और मानवता को एक साथ अंजलि में भरे भविष्य की ओर अग्रसर हो रही है ।"[1]

नयी कविता वातानुकूलिन मानव मूल्यों की उदात्त परम्परा को लक्ष्य करके यथार्थता, शक्ति एवम् जिवनेच्छा आदि विशेषताओं को अपनी जर्जरित झोली में संजोये हुए है । हम यह कह सकते हैं कि नयी कविता नई परिस्थितियों की उपज है । नयी कविता अपने आप में बहुत कुछ लिए हुए है । उसके मूल में हमें आज की परिस्थिति, आधुनिकता एवं निराशा, कुंठा, बेबसी आदि दृष्टिगत होते हैं ।

नयी कविता के जन्म से लेकर आज तक उसने कई करवटें बदली है । इस बात का श्रेय आज की राजनैतिक एवम् सामाजिक परिस्थितियों को जाता है । तब से लेकर आज तक नाविन्यपूर्ण परिस्थितियों के वशीभूत उसे रहना पड़ा किन्तु छठे दशक में पहुँचकर वादों के कुहरे से उभरकर नयी कविता का स्वरूप और उसकी मूल्य चेतना स्पष्ट हो गये थे । छठें - सातवें दशक की कविता में हमें परिवर्तन की झलक नजर आती है । उसमें है मानवीय चेतना और उसके रागात्मक सम्बद्धता के उद्घाटित होते हुए नये-नये आयाम ।

राजनैतिक दृष्टि से यदि हमें देखें तो 1936 ई0 में छायावाद के अवसान के साथ हिन्दी कविता में एक नये प्रकार की चेतना का विकास हुआ । यह चेतना यथार्थ जीवन के अधिक निकट थी । 1930-31 के राजनैतिक वातावरण के ये परिवर्तित अंकुर थे । सितम्बर 1939 ई0 को द्वितीय विश्व-युद्ध ने अपना डरावना रूप समाज के सन्मुख रख दिया । सन् 1940 में मुसलमानों ने "अलग पाकिस्तान" की माँग की । मार्च 1942

1- डॉ0 देवराज - नयी कविता - पृ0 9

में ब्रिटेन के समाजवादी नेता "सर स्टेफर्ड क्रिप्स" के नेतृत्व में क्रिप्स मिशन भारत भेजा गया । 13 अप्रैल 1942 को यह मिशन अपने उद्देश्य में असफल होकर इंग्लैंड वापस भेजा गया । तत्पश्चात् अगस्त सन् 1942 में कांग्रेस की अखिल भारतीय अधिवेशन "अंग्रेजो भारत छोड़ो" प्रस्ताव पास हुआ और "करो या मरो" की भावना लेकर जनता खुले आम निकल पड़ी । इस क्रान्ति का स्वरूप "रूस की अक्तूबर क्रान्ति" तथा फ्रांस की "राज्य क्रान्ति" का सा था । दूसरी बात यह हुई कि सन् 1942 में "बंगाल में भीषण अकाल पड़ा । इसका अत्याधिक प्रभाव गुजरात में तत्कालीन कवियों और लेखकों पर पड़ा । उस समय मुंशी प्रेमचन्द ने "हंस" का विशेषांक प्रकाशित किया । इन सबका थोड़ा - बहुत प्रभाव होना स्वाभाविक है ।

सन् 1945 की 2 सितम्बर को टोकियों में जो सन्धि हुई उसमें विश्व युद्ध की आर्थिक हानि का जिम्मा भारत पर डाल दिया । 18 फरवरी सन् 1946 को नौ-सैनिकों ने विद्रोह कर दिया । फलतः यह योग्य समय था जबकि भारत में स्वतन्त्रता के स्वर्णिम सूर्य के आगमन की प्रतीक्षा थी । 15 अगस्त, 1947 को भारतवर्ष को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई किन्तु हमें पूर्ण रूप में स्वतंत्रता प्राप्त न हो सकी । हमें स्वतंत्रता मिली किन्तु विभाजित रूप में ।

इन सबका परिणाम हुआ राजनीति से नैतिकता का लोप, सांस्कृतिक - साहित्यिक क्षेत्र में सुविधावादी नैतिकता तथा कलाबाजी का पनपना वगैरह । इन सब के फलस्वरूप निहित स्वार्थों के पूंजीभूत स्वरूप से खिन्न होकर वे राजनीतिक कार्यकर्ता, लेखक, कवि आदि तटस्थ होने लगे ।

सन् 1935 से 1945 के आस-पास की इस संक्रमणकालीन स्थिति ने साहित्यिक सांस्कृतिक क्षेत्र में भ्रमात्मक मूल्यों का विकास किया । इन सब परिस्थितियों में विद्रोह करना अनिवार्य बन पड़ा था । ऐसी परिस्थिति में तत्कालीन कवि जीवन और मृत्यु के बीच फंसे हुए मनुष्य की छटपटाहट को व्यक्त करते हुए जीवन के प्रति आस्थावान होकर नूतन सूर्योदय की प्रतीक्षा में मरणोन्मुख प्रयास कर रहा था और इन सब परिस्थितियों से जन्मी आज के काव्य की भूमि अर्थात् नई अभिव्यक्ति की भूमि तैयार हुई । इसी भूमि से उत्पन्न हुई आधुनिक कविता की फसल ।

भारत - पाकिस्तान के विभाजन से पूर्व श्रीमंत सयाजीराव गायकवाड़ ने बड़ौदा राज्य में हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के लिए निष्ठापूर्वक कार्य किया था और उन्हीं की प्रेरणा से गुजरात में कविवर दयारामजी जैसे अनेक कवि हिन्दी काव्य सर्जन की ओर प्रवृत्त हुए । श्रीमंत सयाजीराव गायकवाड़ उत्कृष्ट काव्य कृति को पुरस्कृत भी करते थे । तत्पश्चात् सर्वश्री सरदार वल्लभभाई पटेल, मोहनदास करमचंद गांधी, काका कालेलकर, क०मा० मुंशी, मोरारजीभाई देसाई आदि गुजरात के नेताओं ने हिन्दी को पुष्पित एवं पल्लवित करने में विशेष योगदान दिया ।

स्वातंत्र्य प्राप्ति के पूर्व की स्थिति के पश्चात् स्वातन्त्र्योत्तर काव्य रूपों में भी इसमें तनावपूर्ण स्थिति ही दृष्टिगत होती है । भारत - पाकिस्तान के बटवारे के पश्चात् अंग्रेजों की "बाँटो और राज करो" की नीति के कारण देश में हिन्दू - मुस्लिम दंगे फैल गए । इस अशांत परिस्थिति में युग-पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की सूझ-बूझ और कर्मठता से बिना रक्तपात हुए अधिकांश रियासतें एक झंडे के नीचे आ गईं ।

30 जनवरी, 1948 को नाथूराम गोडसे ने गांधीजी की हत्या की । उसका लोकमानस पर गहरा प्रभाव पड़ा । 1952 में आम चुनाव हुए और कांग्रेस बहुमत से विजयी हुई । सन् 1962 के चुनाव में विजयी होने के लिए चुनाव से पूर्व सरकार ने गोआ - अभियान चलाया । तत्पश्चात् हमारा पड़ौसी चीन सन् 1956 से युद्ध की तैयारी कर रहा था । उसने सन् 1962 में अचानक भारतीय सीमा पर आक्रमण कर दिया ।

1963 ई० में डॉ० राममनोहर लोहिया एक उपचुनाव में विजयी होकर लोकसभा में आये । उनकी उपस्थिति ने राजनीति में हलचल मचा दी । उनके द्वारा सर्वप्रथम सरकार के विरूद्ध अविश्वास के प्रस्ताव पर बहस हुई । इसका गहरा असर हुआ । परिणामस्वरूप "गैर - कांग्रेसवाद" का विकास हुआ तथा दलों के ध्रुवीकरण का बीज पड़ा ।

खास बात तो यह हुई कि लोकसभा में उनके सतत हिन्दी के प्रयोग से हिन्दी को राष्ट्रभाषा का सन्मान प्राप्त हुआ । 27 मई, सन् 1964 ई० को पं० जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु हो गई । तत्पश्चात् प्रधानमंत्री के रूप में लाल बहादुर शास्त्री आये ।

मार्च सन् 1965 ई0 में पाकिस्तान ने भारतीय सीमा पर आक्रमण कर दिया । अपमानजनक समझौते के आघात को सहन न कर सकने के कारण उनकी मृत्यु हो गई । तत्पश्चात् इन्दिरा गांधी ने प्रधानमंत्रीत्व ग्रहण किया । श्रीमती गांधी के सत्तारूढ़ होते ही दो महत्त्व की बातें हुई । बिहार तथा उत्तर प्रदेश में भीषण अकाल पड़ा । जिसने सम्पूर्ण राष्ट्र को प्रभावित किया । जबकि दूसरी महत्वपूर्ण बात यह हुई कि भारतीय रुपयों का अवमूल्यन हुआ । परिणामतः सारे देश में असंतोष फैल गया । तभी 1967 के आम चुनाव में पंजाब, केरल, बंगाल, बिहार, उड़ीसा और तमिलनाडु में गैर – कांग्रेसी सरकार बनी । बाद में सन् 1969 ई0 में राष्ट्रपति डॉ0 जाकिर हुसैन की मृत्यु हुई और राजनीति ने नया मोड़ लिया । कांग्रेस विभाजन की भूमिका तैयार हो गई । उसी वक्त राष्ट्रपति पद के लिए श्री जगजीवनराम तथा श्री नीलम संजीव रेड्डी कांग्रेस खेमों से तथा श्री वी0वी0 गिरि स्वतन्त्र उम्मेदवार के रूप में सामने आये । उसी समय में श्री मोरारजी देसाई से वित्त विभाग छीन लिया गया । 19 जुलाई सन् 1969 को प्रधान मंत्री इन्दिराजी ने 14 प्रमुख बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया । 20 अगस्त, 1969 को श्री वी0वी0 गिरि भारत के राष्ट्रपति घोषित किए गए । बाद में कांग्रेस दो दलों में बट गई – सिण्डीकेट और इन्डीकेट । तभी से व्यक्तिपूजा और दलित तानाशाही के नये युग का प्रारम्भ हुआ । सन् 1971 में बंगला देश ने स्वतंत्रता के लिए युद्ध छेड़ा और भारत से सहायता मांगी । अतः भारत-पाक युद्ध छिड़ गया ।

परिणामतः अर्थ व्यवस्था डगमगा गई । उधर शिमला समझौता हमें रास न आया अर्थात् शिमला समझौता भारत की बहुत बड़ी कूटनीतिक हार सिद्ध हुई । इस बीच देश पर तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता था । पूरे देश में अशांति, रिश्वतखोरी, कामचोरी, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, जातिवाद अपनी चरम सीमा तक पहुँच चुका था । उसी सिक्के का दूसरा पहलू बेरोजगारी, कुण्ठा, शिक्षितों में निराशा आदि था । 26 जून, 1975 को प्रधानमन्त्री का त्याग पत्र मांगने की प्रवृत्ति हुई और 25 जून, 1975 को भारत में प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने आपात् स्थिति की घोषणा की । 19 महीने तक आपात् स्थिति लागू रही । उस बीच श्रीमती गांधी के 20 सूत्रों और संजय गांधी के 5 सूत्रों ने पूरे देश को बंधक बना रखा था ।

1977 में आम चुनावों की घोषणा हुई । कांग्रेस पराजित हुई । यहाँ तक कि स्वयं इन्दिरा गाँधी भी रायबरेली से चुनाव हार गई किन्तु जनता पार्टी के विभिन्न घटक आपस में ताल-मेल बैठाने में निष्फल रहे । परिणामतः श्री देसाई की सरकार मात्र ढाई साल में पदच्युत हो गई । 1980 के संसदीय चुनाव में श्रीमती गाँधी पुनः सत्तारूढ़ हुई । तत्पश्चात् अनेक दल प्रकाश में आये जैसे भारतीय जनता पार्टी, जनता दल, लोकदल, संजय विचार मंच, तेलुगुदेशम् आदि ।

इस राजनैतिक परिवेश ने नयी कविता के स्वरूप को स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है । घटनाओं की घटमाल के परिवर्तित स्वरूप में बुद्धिजीवियों की मानसिकता के प्रभावित होने का परिणाम ही नई कविता है ।

नयी कविता तत्कालीन परिस्थिति का दर्पण है । हिन्दू - मुस्लिम दंगे, ब्रिटिश साम्राज्यवादियों द्वारा देश का विभाजन, गाँधीजी की मृत्यु, पंचवर्षीय योजनाओं की कच्छप गति, बेकारी आदि ने बुद्धिजीवियों में घुटन पैदा कर दी ।" उसका प्रतिबिम्ब नयी कविता है ।

इस काल की कविता में जो संघर्ष उभरा है, वह परिवेश से कटा हुआ एकाकी संघर्ष नहीं है, प्रत्युत समग्र पीढ़ी का सांझा संघर्ष है ।

इस काल में अनेक वर्ग पैदा हुए किन्तु नयी कविता के कवि ने प्रत्येक वर्ग को अभिव्यक्ति प्रदान की है ।

"नयी कविता ने इस बात को उजागर किया कि स्वातन्त्रोत्तर मनुष्य प्राकृतिक अनस्तित्व को समाप्त करके प्राकृतिक अस्तित्व पाना चाहता है । सन् 1952 से लेकर आज तक के आम चुनावों इस देश में जो परिवेश उभरा, जिस प्रकार की नैतिकता जन्मी, जिस प्रकार की जीवन-व्यवस्था पनपी उन सबको नये कवि ने काव्य का विषय बनाया ।"[1]

1- देवराज - नयी कविता - पृ0 24

अब हम एक नजर सामाजिक पृष्ठभूमि पर डालेंगे । नयी कविता का जन्म विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों से हुआ । उसने यथार्थवाद, प्रतीकवाद, बिम्बवाद अस्तित्ववाद, स्वच्छंदतावाद आदि अनेक काव्यरूपों को प्रश्रय दिया जिसका मूलरूप पश्चिम में है । नयी कविता में मार्क्सवाद ने अनेक प्रवृत्तियों को जन्म दिया । जीवन का बौद्धिक स्तरीय मापन, किसी भी पदार्थेत्तर सत्ता पर विश्वास न करना, किसी पर भी श्रद्धा न रखना किन्तु उसे वास्तविकता के स्तर पर ही देखना, धर्म, ईश्वर और भाग्यवाद में अविश्वास, जीवन की कटुता का इकरार, जीवन की विषमता का घटस्फोट, शोषण का चित्रण, भीतरी तौर से जीवन का खोखलापन, उसका निकम्मापन और उसी बीच गिरगिट सा जीवन, पीड़ा, क्षोभ एवं करूणता के सैलाब में डूबती-उतराती जीवन की नैया, इन सब से संघर्षरत मनुष्य की जीवन जीने की जिजिविषा आदि बातें मार्क्सवादी प्रभाव से ही आयी है ।

नयी कविता समाज को पैनी दृष्टि से देखने का प्रयत्न करती है । उसका सामाजिक अवस्थियों से ज्यादा सम्बन्ध है । यह समाज के सुख-दुःख की समान रूप से हिस्सेदार है अर्थात् नयी कविता संवेदनापूर्ण है, समाज की परिस्थितियों का प्रतिसाद है । समाज में घटित अत्याधुनिक परिवर्तन और परंपरागत मूल्यों के बीच उत्पन्न संघर्ष को, नयी और पुरानी पीढ़ी के बीच उत्पन्न होने वाले मानसिक खिंचाव को नष्येतर और सांस्कृतिकता के बीच के टकराव और उनसे प्रस्फूटित स्वर को व्यक्ति और समाज के सम्बन्धों के कसैले तनाव को, राजनीति और गुंडाखोरी के बीच पिसते भद्र समाज की सिसकती आवाज को, गरीबी की कलम को, भ्रष्टाचार के दावानल में झुलसते हुए मनुष्यों को, नयी कविता ने बीना किसी संकोच के व्यक्त किया है ।

इन सबके पीछे तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियाँ जिम्मेदार है अर्थात् नयी कविता की यह जमीन है । कुछ विशेष आविष्कारों के कारण जीवन-मूल्यों में परिवर्तन आया । उनका प्रभाव हमें नयी कविता में दिखाईदिखा है । औद्योगीकरण के विकास से पूंजीपति और श्रमिकों के बीच सीधा संघर्ष प्रारम्भ हुआ । औद्योगीकरण ने हमारे सामाजिक ढाचे का पूरा रूप ही बदल डाला । मात्र इतना ही नहीं किन्तु औद्योगीकरण ने नयी कविता को प्रभावित किया । उसे गति प्रदान की । इन कविताओं के विषय

थे – नये सत्यों की खोज की व्यग्रता और यान्त्रिकता, औद्योगिक युग का तनाव, असन्तोष, एक-दूसरे के आगे निकलने की प्रतिस्पर्धा और उसमें जीवन-मूल्यों का लोप आदि ।

"नयी कविता ऐसे मानव का चित्रण करती है, जिसका स्वरूप क्षेत्रीय नहीं अन्तर्राष्ट्रीय है, जो विश्व समस्याओं से जूझ रहा है, जिसके जीवन पर व्यापक परिवेश प्रभाव डाल रहा है और जो विश्व सभ्यता का गठन करने में जुटा है ।"[1]

{आधुनिक} कविता के काव्यांदोलन :

अगर सोचें तो आधुनिक अर्थात् नयी कविता का जन्म 1900 के बाद ही माना गया है किन्तु श्री मोहन वल्लभ पंत ने अपने पुस्तक "आधुनिक कविता की प्रवृत्तियाँ" में आधुनिक कविता का प्रथम युग सन् 1865 से 1900 तक का माना है । जबकि 1914 से 1936 के आसपास के युग को छायावाद माना है । तत्पश्चात् छायावादोत्तर युग माना गया । मोहभंग की कविता, साठोत्तरी कविता, प्रगतिवादी कविता, प्रयोगवादी कविता, आज की कविता {नयी कविता} आदि नामों एवं सीमाओं को लेकर काव्यांदोलन चला ।

छायावाद के आते-आते आज की नयी कविता तक का काव्यांदोलन अपनी प्रवृत्तियों के धरातल पर विकसित हुआ है किन्तु तत्पश्चात् नयी कविता का काव्यांदोलन अनेक नामों के भ्रम में खोया हुआ हम पाते हैं ।

नयी कविता के उदय के सम्बन्ध में कई मतभेद है । "नयी कविता" भारतीय स्वतन्त्रता के बाद लिखी गयी * उन कविताओं को कहा गया, जिनमें परम्परागत कविता से आगे नये भावबोध की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्प-विधान का अन्वेषण किया गया ।"[2] वास्तव में "नयी कविता "प्रयोगवाद का ही अगला चरण है ।"[3] या हम नयी कविता को प्रयोगवाद का विकसित रूप मान सकते हैं ।

1– देवराज – नयी कविता – पृ0 37

2– डॉ0 नगेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास – पृ0 637

3– डॉ0 हरिशरण शर्मा – नयी कविता : नये धरातल – पृ0 188

डॉ० बादमसिंह के मंतव्य से "1954 में नयी कविता का उदय हुआ जो स्वतन्त्रता के बाद की आस्था, अवास्था, सुख-दुःख और भविष्य के स्वप्निल रंगों की कविता थी ।"[1] अन्य समीक्षकों ने नयी कविता के उदय और पल्लवन में अन्तर बताया है । उनके मत से 1950 से नयी कविता का प्रारम्भ न मानकर पल्लवन मानना चाहिए ।"[2] जबकि गजानंद माधव मुक्ति बोध के मत से "सन् 1951 - 52 के अनन्तर, साहित्य-क्षेत्र से विशेषकर काव्य क्षेत्र से प्रगतिवादी विचारधारा को खदेड़कर बाहर करने के लिए नयी कविता के कुर्ज से शीत युद्ध की गोलन्दाजी की गयी थी ।"[3] अर्थात् नयी कविता की पूर्वभूमि प्रगतिवाद और प्रयोगवाद रहे हैं । "प्रगतिवाद नयी कविता का स्त्रोत है ।"[4] इन सब के लिए जिम्मेदार उस समय की परिस्थितियाँ थीं । परिस्थितियाँ और काव्य प्रवृत्तियाँ ही मुख्य दो विशिष्टताएँ हैं जो समाज के ढाचे को नया मुखौटा पहना सकती है । नयी कविता के आन्दोलन का मुख्य तत्व भी ये ही काव्य प्रवृत्तियाँ बनी । प्रवृत्तियों के बदलाव को सामाजिक परिस्थितियों ने भीतरी तौर पर खोखला कर दिया था । परिस्थितियों के परिवर्तित रूप ने काव्य प्रवृत्तियों को बदलाव के लिए विवश कर दिया और यही विवशता नयी कविता का एक गिरगिट सा मुखौटा लिए या विभिन्न भावों का मेला लिए वास्तविकता की विषाक्तता को लिए, सांसारिक निरसता को लेकर अर्थात् क्षोभ, ग्लानि, सिसकन एवं पीड़ा को लेकर हमारे समक्ष नामों के वैविध्य के साथ उभरती है ।

मेरे ख्याल से शायद उस नामों की तरह ही उसका जन्म भी विवाद का विषय है । डॉ० नगेन्द्र के मत से "सन् 1950 के बाद नये भावबोध की जो कविताएँ लिखी गयी वे नयी कविता हैं ।"[5] जबकि डॉ० दुर्गाशंकर मिश्र ने कहा है कि "सन् 1960

1- डॉ० बादामसिंह रावत - साठोत्तरी हिन्दी कविता की वस्तु चेतना - पृ० 47
2- डॉ० हरिचरण शर्मा - नयी कविता : नया धरातल - पृ० 5
3- गजानन माधव मुक्तिबोध - नयी कविता का आत्म संघर्ष - पृ० 139
4- दिनकर - काव्य की भूमिका - पृ० 49, 50
5- डॉ० नगेन्द्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास - पृ० 618

के पश्चात् की साहित्य पीढ़ी में हिन्दी की नयी कविता के स्वाभाविक विकास एवं नूतन मानवीय मर्यादाओं के निर्माण की आवश्यकता की प्रतिक्रिया में विद्रोह एवं आक्रामकता का तीव्र स्वर विद्यमान है ।"[1] अर्थात् 1960 ही वह युग था जब काव्य प्रवृत्तियों में बदलाव बड़ी तेजी के साथ आ रहा था । उसी समय नयी नयी कविता को अन्य नामों से पुकारा जाने लगा । छठे दशक में पहुँचकर, वादो के कुहरे से उभरकर नयी कविता का स्वरूप और उसकी मूल्य चेतना स्पष्ट हो गयी । छठे सातवें दशक की कविता में मानवीय चेतना की रागात्मक दृष्टि के विविध मोड़ नजर आते हैं ।

साठोत्तरी कविता में आक्रोश एवं आक्रामकता का स्वर विद्यमान है । श्री गिरिजाकुमार माथुर ने भी यह स्वीकार किया है कि "नयी कविता के रूप में अंतः कथ्य और आत्मानुभूति के निवेदन की ओट में पीड़ा, दार्शनिकता, सूफियाना अंदाज, लाक्षणिक विरोधाभास, अप्रस्तुत विधान, अमूर्त और सूक्ति प्रवचनों के एक नए छायावाद ने जन्म लिया ।"

तत्कालीन रचनाओं में अन्तर्सत्यों की व्याख्या होने लगी । आश्चर्य की बात यह है कि इस काव्य-आन्दोलन के प्रवर्तकों में वे भी कवि थे जो नयी कविता में प्रतिष्ठित भी हो चुके थे । कुछ इस प्रकार के कवि भी थे जिनको कोई भी पूछता नहीं था और वे कोई भी आन्दोलन में सम्मिलित होने को परम सौभाग्य समझते थे । जबकि तीसरा एक वर्ग ऐसा भी था जो कुछ नये नाम से नये कवियों का संकलन कर रहा था ।

इन सबका मुख्य लक्ष्य शायद नयी कविता की मृत्यु से है । नये-नये नामों का ढेर शायद नयी कविता को कब्र में गाड़ने के लिए सक्षम न था । यही कारण है कि आज भी नयी कविता अपने अस्तित्व को बनाये हुए हमारे सन्मुख उपस्थित है ।

नयी कविता के कविता क्षितिज पर कई वादों का उदय हुआ । कई कवि उनकी प्रवृत्तियों को सैद्धान्तिक रूप में नई कविता के ही अंदाज में ग्रहण करते थे और साथ ही

1- डॉ0 दुर्गाशंकर मिश्र - आधुनिक कविता प्रमुख वाद एवं प्रवृत्तियाँ - पृ0 169

उसके विषयों में नव्यता लाने के लिए उसमें नग्न - यौन चित्र, विभत्स भाषा का प्रयोग, विषय की कुरूपता का नग्न चित्रण आदि का अधिकतर प्रयोग करने की ओर प्रवृत्त थे । न थी उसमें पूर्णतः उपयोगिता, न था उसमें जीवन मूल्यों का सत्य या सामाजिकता । केवल ख्याति प्राप्ति ही उनके जीवन का लक्ष्य था । वे ख्याति पाने के लिए कोई भी नया नाम कुछ सिद्धांतों को जोड़ - तोड़ कर रख दिया करते थे । अगर हम नयी कविता के काव्यांदोलन पर दृष्टिपात करें तो हमें नयी कविता के ही ढेर सारे नाम मिलेंगे ।

निषेध - कविता से लेकर विचार कविता के बीच और शायद उसके बाद भी दो - चार और नाम भी नयी कविता के साथ जुड़े हैं जैसे कि डॉ० जगदीश गुप्त ने इन नामों की सूची इस प्रकार दी है - सनातन सूर्योदयी कविता, अपरम्परावादी कविता, सीमान्त कविता, युयुत्सावादी कविता, अस्वीकृत कविता, अकविता, अन्यथावादी कविता, विद्रोही कविता, क्षुत्मातर कविता, कबीरपंथी कविता, समाहारात्मक कविता, उत्कविता, विकविता, अश्रुकविता, अभिनव कविता, अधुनातन कविता, नूतन कविता, नाटकीय कविता, एण्टी कविता, निर्दिशामयी कविता, लिंग्वादमोनवादी कविता, एब्सर्ड कविता, गीत कविता, नव प्रगतिवादी कविता, साम्प्रतिक कविता, बीट कविता, ठोस कविता, कोलाज कविता, बोध कविता, मुहूर्त की कविता, द्वीपान्तर कविता, अतिकविता, टटकी कविता, ताजी कविता, अगली कविता, प्रतिबद्ध कविता, शुद्ध कविता, स्वास्थ्य कविता, नंगी कविता, गलत कविता, सही कविता, प्राप्त कविता, सहज कविता, आँख कविता, विचार कविता, क्रुद्ध कविता, भूखी कविता वगैरह ।

लेकिन इन नामों के पीछे भी कोई इतिहास तो अवश्य है क्योंकि उस समय की समाज की परिस्थितियाँ प्रमुख रूप से उत्तरदायी है । "साठ के बाद की कविताओं में असन्तोष, अस्वीकृति और विद्रोह का स्वर साफ तौर पर उभरा है । नयी कविता में भी असन्तोष और स्वीकृति का स्वर विद्यमान है ।"[1] नयी कविता की राजकीय एवं

1- डॉ० नगेन्द्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास (आज की कविता) - पृ० 655

सामाजिक पृष्ठभूमि ही नयी कविता के और उनके नामों के वैविध्य के लिए जिम्मेवार है ।

साठ के बाद में यह स्वर कहीं व्यंग्य - रूप में तो कहीं स्पष्ट रूप में अलग-अलग नामों से हमारे समक्ष प्रकाशित हुए । इस आन्दोलन के प्रवर्तकों में सप्तकीय एवं सप्तकेतर दोनों ही श्रेणियों के कवि रहे हैं । इस काव्यांदोलन में अनेक नाम प्रकाश में आये किन्तु "इन कई नये कविता-नामों अथवा वादों में से कई तो विधिवत् आन्दोलन रूप में नयी कविता के पतन अथवा मृत्यु की आवाज बुलन्द करते हुए घोषणापूर्वक प्रकाश में आये ।"[1]

यदि हम इन्हें सैद्धान्तिक स्तर पर देखें तो हमें इनकी भूमि नयी कविता ही नजर आती है अर्थात् ये सभी कविताएँ सैद्धांतिक रूप से नयी कविता का ही नया रूप है ।

काव्यांदोलनों पर अगर हम दृष्टि डालें तो हमने उनकी पृष्ठभूमि में कुछ नामों या वादों को वर्चस्व प्राप्ति की होड़ में पाया । शीघ्र आधुनिक एवं प्रतिष्ठित होने की अभिलाषा हमें दिखाई देती है । यही अभिलाषा, यही कामना काव्यांदोलन को निमंत्रित करने का कारण बनी । हमने कुछ महत्वपूर्ण आन्दोलनों को ही यहाँ प्राधान्य दिया है -

§1§ <u>युयुत्सावादी कविता</u>

डॉ० बादामसिंह रावत के मत से "अप्रैल सन् 1965 के लगभग एक आन्दोलन युयुत्सावादी कविता के नाम से रूपाम्बरा §कलकत्ता§ की कोख से जन्मा है । जिसके प्रमुख व्यक्तित्व थे शलभ "श्री रामसिंह" ।[2] जबकि डॉ० बैजनाथ सिंहल के मत से "युयुत्सावादी नवलेखन "प्रधान संस्कारी प्रयास" के रूप में अगस्त 1966 में "रूपाम्बरा" का अधुनातन अंक प्रकाशित हुआ ।"[3] युयुत्सावादी अग्रगस्य कवि श्रीरामसिंह "शलभ है ।

1- डॉ० बैजनाथ सिंहल - नयी कविता : मूल्य - मीमांसा - पृ० 74

2- डॉ० बादामसिंह रावत - साठोत्तरी हिन्दी कविता - पृ० 66

3- डॉ० बैजनाथ सिंहल - नयी कविता : मूल्य - मीमांसा - पृ० 76

दोनों व्याख्याओं में कुछ अन्तर अवश्य है किन्तु दोनों युयुत्सावाद की प्रवृत्तियों को ही प्रोत्साहित करती हैं । कवि श्रीरामसिंह "शलभ" ने "युयुत्सावादी" नामक पत्रिका का भी सम्पादन किया । इनके मत से "युयुत्सावादी" क्रान्ति को आमंत्रित करता है अर्थात् नई पीढ़ी में उठता हुआ क्रांतिवाद है और जिसके केन्द्र में है आधुनिकता, परिवर्तन अथवा विघटन ये मानव प्रवृत्तियाँ हैं जिसका सम्बन्ध युयुत्साभाव से है और उसका रूप विद्रोहात्मक, जिजिविषावादी हो सकता है । युयुत्सावादी कवि अपने आप को विद्रोह का सूत्रधार मानते हैं ।

क्या नर्मदाशंकर मेहता को गुजरात का प्रथम युयुत्सावादी कवि कह सकते हैं । बाद में "रूपम" युयुत्सावाद उत्तर भारतीय हिन्दी काव्य में सन् 1965 के करीब की अर्थात् साठोत्तरी प्रवृत्ति है जबकि ऐसी विद्रोही विचारधारा - या होम करके कूद पड़ो फतह आगे है ही" (या मोह" करीने पड़ो फतेह छे आग) का भाव गुजरात की, गुजराती कविता में विशेषकर वीर कवि नर्मद में दृष्टिपात होते हैं अर्थात् उत्तर भारतीय हिन्दी कविता से करीब एक सौ वर्ष पूर्व ।

"श्रीराम सिंह शलभ ने 1966 में "काल सुबह होने से पहले" नामक एक काव्य संग्रह प्रकाशित किया ।"[1] इस काव्य संग्रह की कविताएँ एक ऐसे जागरूक युवान व्यक्तित्व के निकट लेजाती है जो बीटनिकों और जन-वादियों के द्वन्द्व के बीच, अपनी परम्परा और इतिहास को बिना नकारे एक नयी राह के अन्वेषण के प्रति उत्सुख दिखाई देता है । उसने संतुलन एवं आधारहीनता से मुक्ति वगैरह नये मूल्यों की खोज अवश्य की है किन्तु सुनिश्चित जीवनदृष्टि से विकसित और समन्वित न होने के कारण "मूल्य" के रूप में उन्हें प्रतिष्ठा न मिल सकी ।

1- डॉ0 बैजनाथ सिंहल - नयी कविता : मूल्य मीमांसा - पृ0 76

§2§ सनातन सूर्योदयी कविता :

सनातन सूर्योदयी कविता ने नयी कविता का स्थान छिन लिया । "सनातन सूर्योदयी कविता" का नारा "भारती" के सन् 1962 के मार्च अंक में वीरेन्द्रकुमार जैन द्वारा दिया गया ।"[1] आज की परिस्थितियाँ, कुण्ठा, पराजन, पतन, आत्मपीड़न आदि जीवन-मूल्यों की गिरावट को उठाना ही "सनातन सूर्योदयी कविता" है ।

इस सनातनी सूर्योदयी काव्य धारा को नयी कविता की एक प्रबल एवं अल्प ज्ञात प्रवृत्ति - अध्यात्मपूर्ण कविता कह सकते हैं । क्योंकि इसमें डॉ० वीरेन्द्र जैन ने विश्वभर में उभरनेवाली श्री अरविंद की सफड़जीवन, पूर्ण जीवन एवं दिव्य जीवन की भावि कविता का स्वागत कर उसका अनुधावन किया है । हालांकि उदार एवं उदात्त अध्यात्मभावों का निरूपण करनेवाली इस कविता का सम्बन्ध गुजरात के नृसिंहाचार्य, उपेन्द्राचार्य, मूडियास्वामी, सागर महाप्रभु, सुन्दर और राजेन्द्रशाह की आध्यात्म कविता के साथ आसानी से जोड़ा जा सकता है ।

इन कवितावालों ने इस अंधकार से प्रकाश में लाने वाली, अल्प से महत् में ले जाने वाली, मृत्यु से अमृत में ले जाने वाली, सीमाओं से असीम की लीला उतार लाने वाली, भविष्य की अनिवार्यता सनातन सूर्योदयी कविता कहा ।

लेकिन ये कविता ज्यादा समय अपना साम्राज्य न सम्हाल सकी क्योंकि यह एक दृष्टि से नयी कविता के ही करकमलों पर बिराजमान थी । जहाँ वह अपना अलग रंग जमाने की कोशिश करती थी वहाँ अपनी लोकप्रियता खो बैठती थी । "भारती" के ही फरवरी सन् 1965 के अंक में नयी कविता और उसके बाद लेख में इसका नाम सिमट कर "नूतन कविता" हो गया ।"[2] तत्पश्चात् वह "न - कविता" हो गयी ।

1- डॉ० बादामसिंह रावत - साठोत्तरी हिन्दी कविता की वस्तु चेतना - पृ० 62

2- डॉ० बैजनाथ सिंहल - नयी कविता : मूल्य - मीमांसा - पृ० 75

वास्तव में सनातन सूर्योदयी कविता वर्तमान की अपेक्षा भविष्य का अधिक चिंतन करती थी । यही कारण है कि यह आन्दोलन अधिक न चल सका ।

§3§ अकविता :

"अभिव्यक्ति"§1§ में इन्द्रनाथ मदान के प्रस्ताव से रमेश कुंतल, मेघ और गंगा-प्रसाद विमल के सम्पादन में "अभिनव काव्य" की सुबह हुई । इसे जगदीश चतुर्वेदी ने "एंटी कविता" का नाम दिया था । जिसका हिन्दी अनुवाद "अकविता" हुआ । धीरे-धीरे "अकविता" ने विधिवत् आन्दोलन का स्वरूप धारण किया । "अकविता" की दागबेल सन् 1963 में जगदीश चतुर्वेदी के सम्पादन में प्रकाशित "प्रारम्भ" कविता संकलन से पड़ गई थी । इसमें 14 कवियों में जगदीश चतुर्वेदी, कैलाश बाजपेयी, नरेन्द्र धीर, राजकमल चौधरी, केशु, ममता अग्रवाल, श्याम परमार, विष्णुचन्द्र शर्मा, श्याम मोहन, मन-मोहनी, रमेश गाड़, राजीव सक्सेना, स्नेहमयी चौधरी तथा नर्मदा प्रसाद त्रिपाठी है ।"[1]

अकविता में "अ" के निषेध के बोध को अस्वीकार कर उसकी व्याख्या की गयी - "अकविता अन्तर्विरोधों की अन्वेषक कविता है । इसे पूर्ववर्ती काव्य प्रवृत्तियों से अलग संदर्भ में समझना होगा, क्योंकि यह विच्छेद की द्योतक प्रतिक्रिया है । विच्छेद अपनी औपचारिकता से उन समस्त मान्यताओं से जिनका संदर्भ आज व्यर्थ होता जा रहा है ।"[2]

अकविता आन्दोलन का नेतृत्व श्याम परमार ने किया । अकविता नयी कविता की सबसे नजदीकी कविता मानी जाती है । अकविता, नयी कविता की तरह बड़ी चर्चित रही है । उस पर कई लेख भी प्रकाशित हुए है ।

अकविता पूर्ण रूप से निषेध काव्य नहीं है । उसमें एकदम भावुकता मुक्त अ-रोमानी लेखन, समसामयिक वास्तविकता का अनावृत साक्षात्कार एवं

1- डॉ0 बादामसिंह रावत - साठोत्तरी हिन्दी कविता की वस्तु चेतना - पृ0 53

2- श्याम परमार - अकविता और कला संदर्भ - पृ0 1

व्यंग्यात्मक बोध के दर्शन होते हैं अर्थात् अकविता कविता - विरोधी शब्द नहीं रह गया है किन्तु हिन्दी कविता में उभरते नये अन्दाज के लिये, एक पारिभाषिक शब्द हो चला है । उसे "हिन्दी कविता" कहना भी उचित नहीं है । कहने का आशय यह है कि अकविता को हम कविता कुछ अंश तक मान सकते हैं - पूर्ण रूप से नहीं ।

अकविता में "अकवियों ने प्रेम को लेकर भाषा को नंगा और सैक्सी बना दिया ।"[1] यह बात भी है कि इन कवियों ने नगरीय जीवन चित्रण और उसकी विडम्बनाओं को अपने {कन्टेन्ट} काव्य का विषय बनाया था । "साथ ही उसमें वर्तमान यंत्र युग की यातनाओं, एकाकीपन, विसंगति, विडम्बना और परम्परागत मूल्यों के खोखलेपन का वर्णन तथा सामाजिक विधि निषेधों का उल्लंघन आदि बातों का चित्रण भी पाया जाता है । इस प्रकार उसमें मानवीय अस्तित्व के संकट की चेतना, भविष्य के प्रति शंका, भयाक्रांत परिस्थितियों के अंकन, विपर्यय बोध, खलनायकत्व की अभिव्यक्ति और वस्तु लक्ष्य के "प्रति नूतन व्यंग्य आदि के भी दर्शन होते हैं ।"[2]

अकविता में गाली-गलौच और कुरूप नग्नता को प्रभुत्व देकर उन्होंने यौन - कुण्ठाओं में कामउन्माद और अन्य विकृतियों को ही प्रोत्साहित किया है । जो समाज के बदन पर एक नासूर है, एक केन्सर है । उन्होंने गैंडे से लेकर कुरूप प्राणी तक को अपने काव्य के प्रतीक के रूप में समाहित किया है ।

उस वर्ग के कवियों ने "रति और रीति को कविता - सुन्दरी के रूप में प्रस्तुत किया । नयी कविता के साथ-साथ जिन-जिन लोगों ने फैशन से

1- डॉ० बादामसिंह - साठोत्तरी हिन्दी कविता की वस्तु चेतना - पृ० 56

2- डॉ० दुर्गाशंकर मिश्र - आधुनिक कविता प्रमुख वाद एवं प्रवृत्तियाँ - पृ० 189

फायदा उठाना चाहा था, वही लोग अकविता के साथ भी फैशन से लाभ उठाने के लिये आये ।"[1]

अकविता में आधुनिकता की विकृति ही अधिक है । जिसका कारण हमारी आज की परिस्थितियाँ हैं । हमारे आज के जीवन में पाखंड, दुश्चरित्रता, संवेदनशीलता, कथनी और करनी के मध्य गहरा व्यवधान आदि अनेक प्रकार की विकृतियों को प्रस्तुत करने का ढंग योग्य नहीं है । व्यक्ति सत्य और युगीन यथार्थ के नाम पर नग्न अश्लीलता के ही दर्शन होते हैं ।

§4§ <u>अस्वीकृत कविता :</u>

"1966 में श्रीराम शुक्ल ने जुलाई में "उत्कर्ष" के माध्यम से "अस्वीकृत कविता" की नींव डाली ।"[2] "उत्कर्ष" में "भरी हुई औरत के साथ संभोग" - शीर्षक से एक लम्बी अस्वीकृत कविता की रचना की । यही कारण है कि अस्वीकृत कविता के साथ श्रीराम शुक्ल का नाम मुख्य रूप से जुड़ता है ।

यदि युयुत्सा कविता में युद्ध की मुद्रा है, सनातन सूर्यवादी कविता में भविष्य के प्रति आस्था है, अकविता में आधुनिकता की विकृतियाँ और विसंगति है तो अस्वीकृत कविता में अस्वीकार का स्वर प्रखर हुआ है ।

अस्वीकृत कविता में सभी पसन्द न आने वाली व्यवस्थाओं की अस्वीकृति और उन्हें बदलने की व्यग्रता विद्यमान है । इन कवियों के आक्रोश और क्रोध में हमें तटस्थता का लोप होता हुआ नजर आता है । नैतिकता एवं शीलता, राजनीति एवं लोकतन्त्र पर भी ये संदेहात्मक, प्रश्न-भरी और अस्वीकार भरी दृष्टि रखते है ।

अस्वीकृत कविता परिवर्तनशील कविता है । "अस्वीकृत कविता में न केवल काव्य के सौन्दर्य बोधक तथ्यों का बहिष्कार किया गया है अपितु घृणा

1- देवेन्द्र उपाध्याय - नवलेखन : नये खतरे §लेख§ - लहर, अगस्त 66

2- डॉ0 हरिप्रसाद पाण्डेय - नई कविता की भाषा - काव्य - शास्त्रीय संदर्भ में - पृ0 28

एवं अरुचि का वातावरण भी प्रस्तुत किया गया है ।"[1] अस्वीकृत कविता मात्र अश्लीलता का जामा पहन कर हमारे समक्ष उपस्थित हुई है ।

जिस प्रकार अकविता अन्तर्विरोधों की कविता है उसी प्रकार अस्वीकृत कविता – "प्रस्तुत युग में व्याप्त यथार्थ होते हुए भी अस्वीकृत विशिष्ट संवेगों, स्थितियों, मूल्यों, असंगतियों और मूड की सम्प्रेषक कविता है । अस्वीकृत रहने के बावजूद तथ्य तथ्य ही है । अस्वीकृत कविता उसी को प्रस्तुत करती है ।"[2] इस कविता को "शार्ट मूड" की कविता भी कहा गया है ।

§5§ <u>बीट कविता :</u>

"बीट" शब्द और बीट निकवादी चेतना हिन्दी में सर्व प्रथम देनेवाले प्रभाकर मायवे है । "बीट" पर पश्चिम जगत का प्रभाव है । ये अमरिका के बीट जनरेशन से प्रभावित है । "हिन्दी की "बीट कविता" कुत्सा प्रधान कविता है ।"[3] वास्तविक रूप में बीट कविता में मानव मूल्यों का लोप नजर आता है अर्थात् कूड़े के ढेर में हीरे को ढूंढना । हमें इस कविता में भोंडापन ही दिखता है । जीवन – दर्शन का अभाव और जीवन मूल्यों का लोप नजर आता है । बीट कविता में विध्वन्स, विद्रोह, पतनोन्मुख प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करना, प्रतिष्ठित वस्तुओं को उखाड़ फेंकना, यौन विकृतियों पर बल देना आदि कृत्टव्य है ।

उनकी कृतियों में सामाजिक पाखंड एवं कुत्सित जीवन स्थितियों का उद्घाटन, यांत्रिक सभ्यता का खोखलापन और उसका नग्न चित्रण, आधुनिक जीवन की विसंगति एवं अर्थहीनता की दुस्साहपूर्ण अभिव्यक्ति, वैज्ञानिक चेतना, व्यंग्यात्मकता, अतीत और वर्तमान दोनों के प्रति प्रखर विद्रोह, मूल्य मूढता

1– डॉ० दुर्गाशंकर मिश्र – आधुनिक कविता प्रमुख वाद एवं प्रवृत्तियाँ – पृ० 183
2– दे० विमल पाण्डेय – अर्थ 3 – नयी कविता : मूल्य मीमांसा – पृ० 80
3– डॉ० हरिप्रसाद पाण्डेय – नई कविता की भाषा – काव्य – शास्त्रीय संदर्भ में – पृ० 28

एवं यंत्रणामयी विवशता, एकाकीपन, विक्षोभ के स्वर, सहज प्राकृतिक रूप में जीवित रहने की भावना तथा नग्नता एवं उन्मुक्तता की माँग, पीड़ा, अस्तित्व की शाश्वती का भय एवं चिंतन आदि दृष्टव्य है ।

इन सब के केन्द्र में था जीवन - मूल्यों का शून्यावकाश । गांजा एवं चरस पीना । नशीली दवाओं का उपयोग, सामाजिक धरातल का विनाश, विभत्स भाषा का प्रयोग, कुत्स्य नग्नता का अतिरेक, कामोन्माद को प्रोत्साहन देती हुई यौन - विकृतियाँ आदि को सैद्धान्तिक रूप से समर्थन प्राप्त था ।

बीट कविता की आलोचना करते हुए श्याम परमार ने लिखा है - "हिन्दी में बीटनिक हवा रोमैण्टिक अन्दाज से आयी, जैसे वह और देशों में बटी - - - - हवा के साथ घूमने वाले बिंडकाल में भी है । उन्हें सिर्फ धक्का चाहिए ।"[1]

अगर ध्यान से सोचे तो हम कह सकते हैं कि वे आत्मसुख को ही आचरण का प्रमाण मानते हैं और परम्परा का विरोध करते हैं ।"..... लगता है उनकी भूख सेक्स और आत्मप्रचार की है ।"[2]

यहाँ "आत्म" का सम्बन्ध "सोल" या "सेल्फ" के साथ न होकर देह से है । इसे "हेडोनिज़्म" - दैहिकसुखयोगवादीकृति की कविता कह सकते हैं ।

वास्तव में ये कविता कहलाने योग्य ही नहीं है । अगर हम इसे कविता मान भी ले तो ये कविता नयी कविता के आन्दोलन में बड़ी ही घटिया किस्म की मानी जायेगी ।

1- श्याम परमार - अकविता और कला - सन्दर्भ - पृ0 34

2- "वातायन" पाठक अंक - पृ0 40

MEHTA LIBRARY Baroda 51

§6§ <u>निर्दिशामयी कविता एवं ताजी कविता :</u>

निर्दिशामयी कविता अर्थात् दिशा का संकेत न करती हुई कविता, किन्तु "निर्दिशामयी कविता" नाम सत्यदेव राजहंस द्वारा "लय" पत्रिका के प्रथम अंक §1955§ में दिये जाने के पश्चात् तुरन्त बाद ही यह आन्दोलन दिशा-हीनता में विलीन हो गया ।

इस आन्दोलन के साथ ही इलाहाबाद से लक्ष्मीकान्त वर्मा ने "ताजी कविता" का नारा दिया अर्थात् नयी कविता के जन्म - स्थान से ही ताजी कविता का आन्दोलन खड़ा किया गया । "क ख ग" जुलाई 1965 के अंक में उन्होंने नयी कविता को बासी कह कर ताजी कविता की आवश्यकता पर जोर दिया और समकालीन यथार्थ की सही अभिव्यक्ति के लिए ताजी कविता का जन्म हुआ ।

ताजी कविता रूढ़िवादी स्थिति का विरोध करती हुई विचारधारा की कृत्रिमता का भी विरोध करती है । इस कविता की प्रवृत्तियाँ नयी कविता की ही प्रवृत्तियों से काफी मिलती जुलती है ।

"ताजी कविता जिस भाषा की खोज में है वह नंगी भाषा है - आवरणहीन, सज्जाहीन, संस्कारहीन और इन सब से अधिक ऐसा नंगापन जिसमें आभिजात्य जंगलीपन के ऊपर एक समय बोध की छाप लगा सके । ताजी कविता बिना इस नंगी भाषा के नहीं चल सकती ।"[1]

आज के जीवन की जटिलता, दुरुहता, विसंगतियाँ, अर्थहीनता, विघटन आदि को ताजी कविता बिना किसी बिम्बों या प्रतीकों को माध्यम बनाये तीखी, यथार्थपूर्ण एवं चोटदार भाषा में उदासी के स्तर पर अर्थहीनता के साथ प्रस्तुत करने की कोशिश करती है । किन्तु अन्य नामों की तरह यह नाम भी विलीन हो गया ।

1- लक्ष्मीकान्त वर्मा - नये प्रतिमान : पुराने निकष - पृ0 300

§7§ **ठोस कविता :**

ठोस कविता का सर्वप्रथम आन्दोलन 1953 में ब्राजील में हुआ । अकविता की प्रतिक्रिया स्वरूप एक नयी काव्य प्रवृत्ति ही ठोस कविता है । इसको "कांक्रीट पोएट्री" के नाम से भी पुकारा गया है । इस कविता की कुछ खास विशिष्टताएँ हैं । जैसे - ये कविता व्याकरण के नियमों से मुक्त ग्राफिक कला की भाँति लिखी गई । यह एक वैचारिक रचनात्मक क्रिया है । अनेक विचारों को एक साथ चित्रकाव्य की पद्धति से दर्शाया जाता था ।

ठोस कविता का क्षेत्रफल व्यापक है क्योंकि इसका सम्बन्ध मात्र साहित्य से न होकर संगीत और कला से भी है । फिर भी "ठोस कविता" मात्र कुछ अर्थों को ध्वनित करती है । यही कारण है कि उसे कविता कहना उचित नहीं है ।

§8§ **सहज कविता :**

सहज कविता का संकलन 1968 में दिखाई देता है । उस संकलन में 41 कवियों की 62 कविताएँ थी । कई लोगों का मत है कि ये "सहज कविता" कोई भी सहजता का परिचय दे न सकी क्योंकि इसमें ज्यादातर वो ही कवि थे जिनका नाता अन्य आन्दोलनों से था किन्तु हम गंभीरता से सोचें तो सहज कविता हमारे आधुनिक हिन्दी काव्य को एक नयी दिशा की ओर प्रवृत्त करना चाहती है । वास्तव में सहज कविता सार्थक कविता की दिशा में एक मंगलकारी प्रयत्न है । "सहज कविता" को हिन्दी कविता में डॉ0 रवीन्द्र "भ्रमर" ने प्रतिष्ठित किया । डॉ0 रवीन्द्र भ्रमर के शब्दों में - सहज कविता अभिव्यक्ति तथा रचना के स्तर पर मरणशील निराशा एवं पतनोन्मुख यौनाचार आदि का निषेध करती है । इसे असामाजिकता एवं असहजताओं के प्रति विद्रोह भी कहा जा सकता है ।

हम इतना ही कह सकते हैं कि "सहज कविता" न ही कोई आन्दोलन है या नारा है । यह तो आज की विषम काव्य परिस्थितियों में उत्कृष्ट कविता की खोज मात्र है ।

सहज कविता स्वाभाविकता और सहजता की मांग करती है । वह असामाजिक और अमानवीय क्रियाओं का विरोध करती है । यह कविता निराशा, मृत्युबोध, अकविता की यौन प्रवृत्ति आदि प्रवृत्तियों को स्वीकार नहीं करती ।

§9§ <u>विचार कविता :</u>

"विचार कविता" शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 1970 में श्याम परमार ने किया । "विचार कविता" अनुभव को स्थान देती है, साथ ही विचार को भी महत्व प्रदान करती है । विचार कविता की रूपरेखा कुछ स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि "विचार कविता का तत्कालीन सन्दर्भ इतिहास या दर्शन या अन्य कोई सिद्धान्त न होकर समसामयिक स्थिति ही है ।"[1] उसका सम्बन्ध किसी वाद से नहीं है ।

गुजरात के विदेशी शिक्षा प्राप्त एवं प्रमुख बुद्धिवादी साहित्यकारों ने कविता में रागोन्माद एवं भावों के लिये निर्वचन के स्थान पर बुद्धि - तर्क विचार §"थॉट्स एलिमेन्ट्स" § को विशेष पुरस्कृत कर विचारधान कविता का स्वीकार, प्रचार एवं प्रसार किया । ऐसे साहित्यकारों में "कुसुमांजलि" के रचयिता बलवंतराय ठाकोर आदि प्रमुख है ।

"विचार कविता समसामयिक स्थितियों की गहरी समझ और पहचान पर बल देती है और इसमें भावुक या रोमानी हुए बगैर व्यक्तियों और स्थितियों के भीतर की विसंगति और विडम्बना का उद्घाटन किया जाता है।"[2]

विचार कविता में "वस्तु" का प्राधान्य है । उसमें नये जीवन सत्यों की खोज, मूल्यों के अन्वेषण और सामाजिक साक्षात्कार की बात बताई जाती है ।

1- श्री नरेन्द्र मोहन - विचार कविता की भूमिका - पृ0 15

2- हरदयाल - विचार कविता की भूमिका, विचार कविता का संसार - पृ0 31

वह अभिव्यक्ति में सरल एवं स्पष्ट नहीं है । इन कवियों का विचार है कि बदली हुई वर्तमान परिस्थितियों का सही ढंग से मूल्यांकन विचार कविता ही कर सकती है । वह यथार्थ जगत के संवेदन को, अन्तर्विरोधों को सर्वांग रूप से ग्रहण करनेवाली यथार्थोन्मुखी प्रणाली है ।

§10§ <u>अगली कविता :</u>

अगली कविता का प्रकाशन ओमानन्द रूपराम सारस्वत ने 1965 में वल्लभ विद्यानगर §गुजरात§ से किया । यह कविता किसी खास लक्ष्य को लिए सुनिश्चित पथ की ओर अग्रसर हो रही है । इसमें कुंठा, पीडा, विषाद, निराशा, अनास्था आदि को कोई भी स्थान नहीं है अर्थात् ये कविता मृत्युन्मुखी कविता न होकर आस्था-परक कविता होगी और जिसमें पथ प्रदर्शक होंगे - विश्वास, आशा, श्रद्धा, बुद्धि प्रसूत प्रेरणा आदि ।

§11§ <u>आज की कविता :</u>

"आज की कविता" का प्रकाशन मार्च 66 में हुआ । इसका मुख्य उद्देश्य अर्थ की लेन-देन की समाप्ति और व्यक्ति सम्बन्धों की रिक्तता को भरना था ।

इन सारे नये नामों और आन्दोलनों को देखने से यही निष्कर्ष निकलता है कि इनके प्रणेताओं में अपनी बात कहने की उत्कट लालसा थी फिर बात वैसी भी क्यों न हो । जिस वस्तु स्थिति के प्रति विरोध के रूप में ये काव्य आन्दोलन किये गये, बाद में वे उसी में विलीन हो गये ।

इस प्रकार नयी कविता का विकास सीधी सरल रेखा में न होकर वक्र रेखाओं में हुआ है ।

गुजरात में आधुनिक हिन्दी काव्य की विविध प्रवृत्तियाँ

अब तक प्रस्तुत परिस्थितियों के आधार पर हम गुजरात के आधुनिक काव्य की प्रवृत्तियाँ निश्चित कर सकते हैं। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों को उभारने का प्रयास किया गया है –

1) नवीनता एवं आधुनिकता की उचित रूप में स्वीकृति और सामाजिक विकास सुधार का आग्रह।

2) वैयक्तिकता : आत्मकेन्द्रित और खण्डित

3) बौद्धिकता का आग्रह

4) आधुनिक संवेदना : क्षणवाद और अस्तित्वबोध

5) प्रकृति, प्रेम एवं नारी चित्रण

6) लोक साहित्य और लोक गीत

7) आधुनिक काव्य में भदेस चित्रण

8) राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता एवं एकता

9) आधुनिक काव्य में वेदांत एवं आध्यात्म दर्शन

10) राजनैतिक संदर्भों से साक्षात्कार

11) नयी कविता में व्यंग्य एवं हास्य वगैरह

आधुनिक काल में पुरानी परम्पराओं और रीति-रिवाजों का योग्यतम रूप में स्वीकार किया गया। नयी कविता में अधिकतर रूढ़ियों से मुक्ति का प्रयास द्रष्टव्य है। आधुनिक युग नवीन मूल्यों को स्थापित कर पुराने मूल्यों के विस्थापन का युग है। आज परम्परागत रूढ़ियों, मान्यताओं, मूल्यों, विश्वासों का विघटन हो रहा है। विज्ञान के नये आविष्कारों ने ज्ञान का नया आलोक फैलाने का प्रयत्न किया है। व्यक्ति कुछ नया खोजने के प्रयास में है। यही कारण है कि जीवन में संघर्ष, विघटन, नये मूल्यों की स्थापना और अन्वेषण हो रहा है। आज नैतिक मूल्य टूट रहे हैं, आस्था का लोप हो रहा है, वैज्ञानिक यान्त्रिकता से ग्रस्त मनुष्य स्वयं को एकाकी अनुभव कर रहा है। यह अकेलापन जीवन की व्यस्तता और यांत्रिकता का परिणाम है। महानगरीय भीड़ में व्यक्ति को अकेलापन और टूटन की अनुभूति होती है। आपसी सम्बन्धों का तथा सहानुभूति और प्यार का अभाव व्यक्ति को डस रहा है। कुंठा,

संत्रास, यौन विकृति, बेरोजगारी, आज की कविता का रूप और स्वर बदल रहे हैं। व्यक्ति जो है उससे कहीं अधिक दिखाने का प्रयास कर रहा है। झूठे अहं एवं बड़प्पन के भाव ने उसे अस्थिर कर दिया है। संघर्षरत जीवन ने व्यक्ति की रगों में झूठ एवं कर्तव्य के प्रति बेईमानी भर दी है। यही कारण है कि नयी कविता में धुंधले जीवन की अभिव्यक्ति की अस्पष्टता, दुर्बोधता और जटिलता है जो पूर्णतः स्वाभाविक है।

आज व्यक्ति अनेक प्रकार के मुखौटे लगाकर जीने को विवश है। उसके विचारों, कल्पनाओं, योजनाओं, दैनिक कार्यों में एकता और निरन्तरता नहीं है। यह तनावपूर्ण स्थिति व्यक्ति को ग्रस लेना चाहती है। आज की कविता इसी तनावपूर्ण परिवेश की यथार्थ अभिव्यक्ति है। वैविध्यपूर्ण जीवन ही विषम है। यही कारण है कि आधुनिक काव्य में विषम और जटिल जीवन की अभिव्यंजना तनावपूर्ण स्थिति को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है।

आधुनिक काव्य हमारे समक्ष आज के युग-बोध का सही चित्र प्रस्तुत कर रहा है। इसी से नयी कविता मानव के अन्तर्मन और विचारों का श्रृंखलाबद्ध उद्घाटन न करके, जटिल संवेगों की अभिव्यक्ति असम्बद्ध चेतना और स्मृतियों को केन्द्र में रख कर करती है। गुजरात के आधुनिक काव्य के गर्भाधान में यह प्रवृत्ति विशेष रूप में रही है।

आज के मनुष्य के जीवन की कुंठा, विघटन, नग्नता को सीधे और सपाट रूप में आधुनिक काव्य में स्थान मिला है। आज मनुष्य मूल्यों के विघटन और टूटन को अनुभव कर रहा है तथा नये मूल्यों के अभाव में जी रहा है। "एक युग मर रहा है और दूसरा जन्म लेने में असमर्थ है।"[1] जीवन के इसी मंथन से नये मूल्यों की स्थापना एवं नया युग-बोध सम्भव है। यही कारण है कि आज के युग में युगीन चेतना, आधुनिकता और सामाजिक भाव-बोध है।

1- लक्ष्मीकान्त वर्मा - नयी कविता के प्रतिमान - पृ0 17।

वर्तमान युग जीवन में जिस त्वरित गति से परिवर्तन हो रहा है उसके कारण मानवीय आस्थाएँ विचार और मूल्य भी बदल रहे हैं। मूल्यगत परिवर्तन के क्रम को हम विश्व, राष्ट्र, समाज और व्यक्ति जीवन के प्रत्येक चरण में देख सकते हैं।

फिर भी प्राचीन और नवीन जीवन मूल्यों में से किनका वरण करें ? सच तो यह है कि आज के समाज में जहाँ कवि विचरण करता है वहाँ कुंठायें हैं, प्रवंचना है, अभाव हैं, अतृप्ति है और असन्तोष है। बेकारी, गरीबी, निरक्षरता, बहुप्रजनन आदि के कारण समाज में अनेक स्वार्थसाधक विघटनकारी शक्तियाँ पनप रही हैं, जो परम्परित जीवन मूल्यों के मूलोच्छेदन में अनवरत रत है। यही कारण है कि आज के मानव की स्थिति संकटापन्न है और आत्म चेतना कुंठित हो गई है।

आज का मानव एकाकीपन से ग्रस्त है। इसी से एक-दूसरे के प्रति जो अपनत्व लगाव होना चाहिए वह नहीं रहा है। आधुनिक काव्य के जन्म एवं विकास काल में विघटनपूर्ण परिवेश रहा। परिणामतः सामाजिक, राजनैतिक तथा साँस्कृतिक परिस्थितियाँ उसी के अनुरूप पनपी। याँत्रिक सभ्यता के विकास के कारण वे बौद्धिकता से ग्रस्त थीं किन्तु विषमता के संक्राँतिकाल में व्यक्तित्व खोखला होने लगा था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आत्मविश्वास आया और व्यक्ति में यह चेतना जग गई कि मेरा अपना अस्तित्व किसी से कम नहीं है। उसमें उसका अहं झलकने लगा किन्तु न था उसमें अहंकार और न ही उच्छृंखलता परन्तु वह जागरूक होकर अपने दायित्वों को स्वीकार करने लगा। आज वह हर परिस्थितियों का सामना हंसते-हंसते करने के लिए तैयार है। वह कल्पनाओं का आश्रय लेकर यौवन का अकेलापन भी सह लेने के लिए तैयार है। उसे भविष्य के प्रति आशा है। वैयक्तिकता के प्रबल मोह के कारण उसका अहं उसे कहीं झुकने नहीं देता। विषम से विषम परिस्थितियों में भी वह जीवन के प्रति आस्थावान दृष्टिकोण अपनाए रखता है।

लौकिक स्तर पर जब उसकी कामनाएँ सफल नहीं हुई तो उसके मन की इन दमित इच्छाओं ने कुण्ठा को जन्म दिया तथा कुण्ठाग्रस्त व्यक्तित्व के कारण कवि के जीवन में अनास्था, निराशा, घुटन आदि का प्रवेश हुआ। अनास्था का जन्म उसके अहं पर होने वाले आघात का परिणाम है, इसी से क्रोधित होकर उसने परम्परागत साहित्यिक मूल्यों को अस्वीकार किया साथ ही प्रतिष्ठित जीवन-मूल्य भी उसे महत्वहीन प्रतीत हुए, यही कारण है कि उसने अपनी अनास्थामूलक प्रवृत्ति की अनिवार्यता प्रमाणित करने का प्रयास किया। उसका धर्म व ईश्वर में विश्वास नहीं रहा। वह नास्तिक हो गया।

परिणामतः नैतिकता का पतन, आश्रयहीनता से उत्पन्न असहायता, अनास्था, भटकाव आदि के कारण भी नयी कविता में निराशा की अभिव्यक्ति हुई । श्री सुमित्रानंदन पंत का कथन ठीक ही है कि – "नया कवि अपने युग जीवन की यथार्थ तथा व्यक्तिगत परिस्थितियों से ऐसा चिपका हुआ है कि परम्परा तथा प्रतिष्ठित मूल्यों के प्रति अपनी अनास्था प्रकट करते हुए भी वह उनके जोड़ की नयी मान्यताओं को जन्म देने में अभी समर्थ नहीं हो सकता है ।" निराशा को जन्म देने वालों में युद्ध की आशंका, नैतिकता का ह्रास, परवशता, विवशता, आर्थिक विषमता, नास्तिकता, सामाजिक विषमता, विज्ञान की उन्नति के कारण औद्योगिक विकास आदि प्रवृत्तियाँ रही । इसी कारण से आधुनिक कविता में निराशा के अन्तर्गत विघटन मानव मूल्य, समाज की यथार्थ स्थिति, जीवन के संघर्ष आदि का मार्मिक चित्रण किया गया है ।

किन्तु नयी कविता में अनास्था, अविश्वास, नकारात्मकता, विवशता और निराशा के अलावा आस्था, विश्वास और आशा के स्वर भी मिलते हैं । कवि ने जीवन में बहुत से संघर्ष झेले हैं । अतः नये कवि की आस्था विभिन्न रूपों में जिन्दगी के प्रति, वर्तमान तथा भविष्य के प्रति मुखरित हुई । डॉ० चंचल शर्मा के मत से – "वह इन आशाओं के सहारे जीवित है कि कभी लहर चांद को छू लेगी, उसका भाव झूमकर गीत बन जाएगा । अन्तहीन यात्रा का अंत हो जाएगा, भटके हुए को राह मिल जाएगी । वर्तमान अभी समाप्त नहीं हुआ है, जीवन का समस्त सूनापन मधुबन बन जाएगा ।"[1] इन्हीं आस्थावान एवं आशान्वित विचारों के कारण आधुनिक काव्य को एक नई दिशा मिलने की संभावना है । "नया कवि अपने हृदय में जीने का संकल्प लिए हुए है इसीलिए वह प्रति-क्षण अपने भीतर एक युद्ध लड़ रहा है, धरती को विस्तार, हृदयों को सौन्दर्य, सौन्दर्य को उद्गार तथा आस्थाओं को विकास देने के लिए एवं निराश निगाहों को विकास देने के लिए एवं निराश निगाहों में आशा कौंधाने के लिए ।"[2] प्रस्तुत प्रवृत्तियाँ तत्कालीन परिस्थितियों एवं परिवेश को साथ लिए हुए हैं । निराशावाद को पतनोन्मुख साहित्य का आधार माना जाता है

1– डॉ० चंचल शर्मा – स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य में मनोवैज्ञानिक आयाम – पृ० 45

2– डॉ० चंचल शर्मा – स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य में मनोवैज्ञानिक आयाम – पृ० 49

और आशावाद उससे विपरीत स्थिति मानी जाती है । आज मनुष्य अपने में विश्वास करने लगा है । जिन्दगी में बहुत कुछ सहने के पश्चात् वह स्वतंत्र रूप से कुछ चाहता है । उसे भविष्य के प्रति कुछ आशाएँ हैं, अभिलाषाएँ हैं । कवि के शब्दों में "आदमी आज खीजता है, पकता है, टूटता है, बनता है और इन परिस्थितियों में वह अपने और अपने से बाहर विषाक्त वातावरण से जूझता है । इस जूझने में इस टूटने में, इस खीझने में और पकने की प्रक्रिया में निश्चय ही उसका आत्मविश्वास भी विकसित होता है । सम्प्रदायों के विष को आज के मानव ने काफी झेला है, इसलिए वह आज अपनी भाषा में बोलना चाहता है, अपनी शैली में कहने के लिए आग्रह करता है । यही उसकी विशेषता है ।"[1]

नयी कविता में एक महत्वपूर्ण मानी जाने वाली प्रवृत्ति है नास्तिकता । आज पूरे परिवेश में बौद्धिकता निहित है । वैज्ञानिक विकास के परिणाम स्वरूप हमें आस्तिकता एवं श्रद्धा का लोप दृष्टिगत होता है । नयी कविता में ईश्वर, मंदिर, नियति आदि के प्रति विरोध की भावना पाई जाती है । सर्वत्र नास्तिकता फैली हुई है । लोगों के विचारों में परिवर्तन आया है । आज के मानव को असहायता, अस्थिरता, बेचैनी, नैतिक मूल्यों का विघटन एवं विवशता आदि का जो सामना करना पड़ रहा है उसके मूल में किसी - न - किसी अंश तक नास्तिकता की भावना का ही हाथ है । इस युग का मनुष्य वर्तमान में जीता है । क्षणवादी कवि की भविष्य पर आस्था नहीं होती । उसके मत से क्षण में जीवनयापन करना और उसके सुख को अंगीकार कर लेना ही जीवन का सही उपयोग है । उनके मानने से जीए जाने वाला क्षण ही शाश्वत है । जीवन का उत्कर्ष इसी के द्वारा हो सकता है । यही कारण है कि हम जीवन में एक के बाद एक क्षण को सुखपूर्ण बना कर उसे अपनाते चलें । क्षण के द्वारा ही वर्तमान का निर्माण होता है और क्षण की उत्तेजना ही मनुष्य को सुख देती है । वास्तव में यह क्षणवादी विचार-धारा पाश्चात्य साहित्य की देन है । नया कवि क्षण की महत्ता स्वीकार करते हुए क्षण के जीवन में ही तन्मय रहना चाहता है । वह क्षण में ही संपूर्णता पाता है । वह क्षण की अनुभूति की अभिव्यक्ति के प्रति आस्थावान है ।

1- लक्ष्मीकांत वर्मा - नयी कविता के प्रतिमान - पृ० 55

आज मनुष्य तर्क - बुद्धि से काम लेता है । वह अंधश्रद्धा में नहीं मानता । उसके पास विवेक का निकष है, जिस पर वह प्रत्येक वस्तु के सत्य और असत्य को परख सकता है अर्थात् आज की कविता में बुद्धि - तत्त्व की प्रधानता है । "नया भावबोध सिद्ध - सत्य जैसी वस्तु नहीं मानता । उसकी प्रकृति है प्रत्येक सत्य को विवेक से देखना, उसके परिप्रेक्ष्य में प्रयोग के माध्यम से निष्कर्ष तक पहुँचना । इस प्रक्रिया में थोड़ा भटकाव संभव हो सकता है, थोड़ी बहुत बहकाव की भी संभावना हो सकती है, किन्तु यह प्रक्रिया ठहराव की मौत से कहीं अधिक जीवंत और प्रेरणावान है ।"[1] आज आदमी का जीवन दिनों दिन चिंतन प्रधान होता जा रहा है, क्योंकि भावना से वह अपनी समस्याओं को नहीं सुलझा पाता अर्थात् केवल कोरी भावुकता आज के मनुष्य को संतुष्ट नहीं कर सकती किन्तु हृदय से अधिक उसे मस्तिष्क से काम लेना पड़ता है । डॉ० कुमार विमल ने लिखा है - "नई कविता में चिंतन को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है । आज का कवि भावना और कल्पना से अधिक चिंतन का विश्वासी रहा है । उसने कविता को तस्वर चिंतन बना दिया है । अतः चिंतन - प्रधान नई कविता जन - सभ्यता की नहीं, विशिष्ट संस्कृति की वस्तु बन गई है ।"[2] आज समस्याओं को बौद्धिक धरातल पर रखकर उनका विवेचन किया जाने लगा है । नवीन सत्य को वैज्ञानिकता के साथ स्वीकार करने में बौद्धिकता का आग्रह उचित है । बौद्धिकता के साथ अहं का विकास भी हुआ । भावना और श्रद्धा के स्थान पर तर्क और विश्लेषण की प्रवृत्ति आई जो नये काव्य को स्वस्थ धरातल पर लाती है ।

भीषण विश्व युद्ध की विभीषिकाएँ, औद्योगिक एवं वैज्ञानिक क्षेत्रों के सफलता तथा निष्फलता का चित्रण हमें आधुनिक काव्य में मिलता है । विज्ञान ने विश्व की समस्याओं को सबकी समस्याएँ बना दिया । प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध के उपरान्त कवियों की दृष्टि व्यापक हुई और विभिन्न मतवादों और राजनीतिक विचारधाराओं से ऊपर उठकर कवि उन्मुक्त जीवन को स्वीकारने लगे । उन्हें युद्ध की भयानकता, वास्तविकता एवं आधुनिकता के धुएँ में खोया हुआ आज का महानगर तथा उसका अजनबीपन, बोरियत,

---

1- लक्ष्मीकांत वर्मा - नयी कविता के प्रतिमान - पृ० 67

2- डॉ० कुमार विमल - नयी कविता, नई आलोचना और कला - पृ० 7

असुरक्षा, भय और अकेलापन की त्रासद अनुभूति होने लगी । विज्ञान के आविष्कारों, और यातायात के साधनों ने एक ओर गाँव को नगरों से जोड़ा है और दूसरी ओर औद्योगीकरण की आपाधापी की वजह से इन गाँवों का टूटना स्वाभाविक बात थी । शहरों के आकर्षण से गाँव टूटने लगे और यहाँ महानगरीय विराटता आम आदमी को अपने क्रोड़ में कस कर चुर-चुर करने लगी । आधुनिक काव्य में हमें यह प्रवृत्ति भी नजर आती है ।

नव-बुद्धिवाद एवं वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ मोहभंग ने भी अपना स्थान ग्रहण कर ही लिया । देश की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों ने जिस परिवेश को जन्म दिया उसने जन-साधारण के साथ-साथ साहित्यकारों को भी प्रभावित किया । मोहभंग के कारण हमारी संजोयी हुई आशाएँ टूटकर बिखर गई, उसमें एक निराशा का भाव छा गया । पदलोलुप भ्रष्ट नेताओं ने महँगाई ने, आर्थिक विषमता और बेरोजगारी ने चलती - फिरती लाशों और झुग्गी झोपड़ियों से उठते धुएँ और घुटन के बीच जिये जाने वाले जीवन के दृश्यों ने युवा पीढ़ी को कुण्ठा एवं निराशाग्रस्त बना दिया है ।

राजनीतिक व्यवस्था के खोखलेपन ने, देश में फैली आपसी फूट ने, सामाजिक निष्फलता ने एवं आर्थिक कमजोरी ने मोहभंग के रूप में जन्म लिया । इसी कारण से हमें नये काव्य में विद्रोह की प्रवृत्ति दिखाई देती है । इन असफलताओं ने युवा वर्ग की मानसिकता को प्रभावित किया । उस समय देश में चिन्तन के क्षेत्र में व्यापक उथल-पुथल हो रही थी । विद्रोह से भरे हुए तथा धर्म और ईश्वर से अलग स्वतन्त्र मनुष्य की प्रतिष्ठा हुई । रंग-भेद, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवादी शोषण की नीति के प्रति नये सक्षम मनुष्य की सम्भावना की ओर इंगित किया गया ।

आधुनिक काव्य में व्यंग्य की प्रवृत्ति का स्वर प्रधान रहा है । वैयक्तिक यथार्थ और सामाजिक यथार्थ को संवेदना और अनुभूति के स्तर पर मानवीय विडम्बनाओं और असंगतियों के माध्यम से व्यक्त किया गया है । जिसमें वर्तमान कटुताओं और विषमताओं के प्रति व्यंग्यपूर्ण भाव व्यक्त हुआ है । जैसे एक ओर घटिया, बुद्धिहीन, अवसरवादी नेतृत्व, स्वार्थलिप्त बड़े लोग, पंगुता का नाटक रचने वाले भिखारियों, बढ़ती हुई जनसंख्या,

स्वदेशी शासकों की अकर्मण्यता है तो दूसरी ओर निर्धनता से पीड़ित जनता, नौकरशाही, फैशन और विलासिता में आकंठ डूबे युवक-युवतियाँ, एटक बम की विभीषिका, जड़ मान्यताएँ और उसी परिवेश की घुटन में मृत्यु के इन्तजार में जीने की विवशता, दलवाद आदि के प्रति सटिक एवं मार्मिक व्यंग्य मिलता है ।

साथ ही अमीर और गरीब के शोषण - शोषित सम्बन्ध, महानगरीय परिवेश की विभीषिका से त्रस्त विश्वमानवता की आंतरिक पीड़ा, मशीनी सभ्यता, कोरी भावुकता और संवेदना, राजनीतिक षडयन्त्रों पर भी तीखा व्यंग्य मिलता हैं ।

आधुनिक काव्य की यह बड़ी ही सशक्त प्रवृत्ति रही है उसमें वैविध्यपूर्ण विषयों पर तीखा व्यंग्य किया गया है । बुद्धिजीवियों की निष्क्रियता, संवेदनहीन व्यर्थ सेमिनारों, बहसों, अखबारों में प्रकाशित खबरों, राजनीतिक मंचों पर होते शुष्क भाषण, पलायनवादी विचारधारा आदि का वास्तविक निरूपण नयी कविता में नये ढंग से किया गया है ।

अतः हम कह सकते हैं कि गुजरात के आधुनिक हिन्दी काव्य में राजनीतिक परिस्थितियाँ और विडम्बनाओं पर झकझोर देनेवाला व्यंग्य मिलता है ।

अन्य प्रवृत्तियों में छायावाद, रहस्यवाद, प्रयोगवाद एवं गांधीवादी विचार-धारा, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक गतिविधियाँ तथा भौतिकवाद आदि का भी विशेष रूप से विश्लेषण किया गया है । एक ओर छायावाद ने इसके मूल तत्व को सौन्दर्य एवं प्रेम के रूप में ग्रहण किया है तो गांधीवाद ने उसे सत्य एवं अहिंसा के रूप में ग्रहण किया है । भावना के क्षेत्र में जो सौन्दर्य है वो ही चिंतन के क्षेत्र में सत्य है । सौन्दर्य अर्थात् प्रेम और चिंतन अर्थात् अहिंसा । मूल रूप से अभिव्यक्ति के माध्यम का अन्तर है वास्तव में छायावाद और गांधीवाद का मूल दर्शन सर्वात्मवाद ही है ।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता का सीधा सम्बन्ध राष्ट्रीय आदर्शवादी चिंताधारा से तो है ही, इनका मूल आधार गांधी-दर्शन हम मान सकते हैं । गांधीवाद के साथ-साथ छायावाद से भी वे प्रभावित रही है किन्तु हमें इन कविताओं के पीछे सत्य एवं

अहिंसा के आदर्शों की प्रेरणा मिलती है अर्थात् गांधीवादी विचारधारा के अन्तर्गत ये प्रवहमान रही । इनकी देशभक्ति जीवन के संस्कारी मूल्यों से अनुप्राणित है । वह यहाँ धर्म रूप में स्वीकृत की गई है । इनमें सर्वत्र ही परम्परा की श्रद्धापूर्ण स्वीकृति है । आधुनिक कवि का लक्ष्य भौतिक सुख-समृद्धि न होकर भारत की जनता तथा उसके साथ समस्त मानवता का अभ्युदय है ।

भौतिकवादी प्रवृत्ति मूलतः मार्क्स दर्शन से प्रभावित रही । छायावाद की अतीन्द्रिय सौन्दर्य विकृतियाँ और रोमानी रूप उल्लास की प्रतिक्रिया स्वरूप रची गई कविताओं का भी इसी चिन्ताधारा से सम्बन्ध है । उन्हीं कविताओं का प्रायः प्रगतिवादी और प्रयोगवादी नाम दिए गये । प्रगतिवादी काव्य मार्क्सवादी दर्शन के साथ पूर्णतः आबद्ध है । जबकि प्रयोगशील कविताएँ भौतिकवादी एवं विद्रोह का जामा पहने हुए हैं । प्रयोगवादी कविता में परम्परा के प्रति अनास्था का प्रबल भाव है । उनका दृष्टिकोण वैयक्तिक हो गया है ।

यहाँ के हिन्दी काव्य में हमें वैदिक दर्शन का एकेश्वरवाद का प्रभाव लक्षित होता है । आज के कुछ कवि वैदिक कवि की भाँति ही आत्मा, परमात्मा तथा ब्रह्म और जगत की एकता स्थापित करते हैं और जगत को ब्रह्म रूप चित्रित करते हैं । साथ ही ब्रह्म को जगत का निमित्त और उपादान मानते हैं ।

अद्वैत दर्शन में वैविध्य है जैसे शांकर - वेदान्त, विवेकानंदजी का व्यवहारिक वेदान्त, श्री अरविन्द दर्शन, बौद्ध दर्शन, शैव दर्शन, वैष्णव वेदान्त, टागोर के सौन्दर्यात्मक दर्शन प्रभाव वगैरह ।

शंकर ने समस्त जगत को ब्रह्म का विवर्त माना है परन्तु वह जगत माया के साथ बनता है, निरपेक्ष रूप में वह परब्रह्म है । अनेक मत से जीवमुक्ति का योग अर्थात् जीव माया से छुटकारा प्राप्त करने के बाद ब्रह्म में मिल जाता है । ब्रह्म के साक्षात्कार के साथ ही उसका समस्त अज्ञान नष्ट हो जाता है, यही जीवमुक्ति है ।

दूसरी ओर वैष्णव वेदांतवाद में रामानुजाचार्य ने विष्णु को ही अधीश्वर माना । वे अन्तर्यामी है । सृष्टि का आदि और अन्त भी वही है । भगवान की उपास्य मूर्ति है । जबकि विशिष्टाद्वैत में चित् तत्व को जीवात्मा माना है । यह स्वयं प्रकाश,

अचिन्त्य, नित्य, आनन्द रूप, निर्विकार है तथा ज्ञान का भंडार है । ईश्वर इसका नियामक और धारक भी है । यहाँ कवि प्रेमाभक्ति का पोषक है, दास्यभक्ति का नहीं । विशिष्टाद्वैत के मतानुसार जगत जड़ और ब्रह्म उसकी आत्मा स्वीकार करते हुए जीव के लिए भगवान के दासत्व की प्राप्ति ही मुक्ति है ।

विवेकानन्दजी ने सर्वधर्म के समन्वय का मार्ग अपनाया । जीवन में आध्यात्मिकता को प्रमुखता दी । उन्होंने अपने व्यवहारिक वेदान्त में कर्मठता को विशेष महत्व प्रदान किया । उनके मत से ब्रह्म एक प्रकृत सत्ता है । वह अव्यक्त है और उसकी धारणा भी नहीं की जा सकती । विवेकानन्दजी के मतानुसार ईश्वर एक ऐसा वृत है जिसकी परिधि कहीं भी नहीं है और जिसका केन्द्र सर्वत्र है । इसका प्रत्येक बिन्दु सजीव, चैतन्य और समान रूप से क्रियाशील है । जीवन और मृत्यु में, सुख और दुःख में ईश्वर समान रूप से विद्यमान है । समस्त विश्व ईश्वर से पूर्ण है । आधुनिक काव्य स्वामीजी के त्याग, परब्रह्म परमात्मा के प्रति अनिर्वचनीय प्रेम तथा मानवतावादी भावना से प्रभावित है । उनके दर्शन में एक ओर मानवतावादी प्रवृत्ति पर विशेष प्रेम एवं त्याग रूपी परमेश्वर की स्पष्ट छाप परिलक्षित होती है तथा दूसरी ओर दीनहिनों के प्रति सहानुभूति भी प्रकट होती है । उनके मत से जीवन का मूल मंत्र प्रेम है । आत्मा ही परमात्मा है इसलिए आत्म साक्षात्कार ही जीवन का लक्ष्य है । उनके मुक्ति - सिद्धान्त का प्रभाव नयी कविता में परिलक्षित होता है ।

महर्षि अरविन्द की योग साधना का आधार ऋषियों का आध्यात्मिक सत्य है । वे परम सत्ता के अद्वैत रूप को मानते हैं । उनके क्रम विवर्तन का प्रयोजन है जड़ में दिव्य आत्मा को विकसित करना । उनका ब्रह्म विश्व रूप होते हुए भी विश्वातीत और निरपेक्ष है, देशकाल तथा सीम-असीम से परे है, अपने में पूर्ण स्वतंत्र है । उसी को प्राप्त करना मानवमात्र का ध्येय होना चाहिए ऐसा वे मानते थे ।

शैव दर्शन में शिव शक्ति का आन्तरिक रूप सदाशिव और बाहरी रूप ईश्वर है । वे शिवसूत्र चैतन्यात्मा की संज्ञा से आत्मा को चैतन्य रूप मानते हैं । उनके मतानुसार जीव असंख्य और शाश्वत है और परमशिव का अंश है ।

बौद्ध दर्शन के अनुसार चार आर्य सत्य माने गए हैं – (1) संसार दुःखमय है । (2) दुःखों का कारण है दुःख से पीड़ित होकर उसके नाश करने के उपायों को लोग ढूंढा करते हैं । (3) दुःख – निरोध, (4) दुःख निरोध के उपाय भी है ।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी गीतांजली द्वारा ईश्वर की निर्विकल्प प्रतिभा अंकित की तथा रहस्यवादी, सौन्दर्यवादी, व्यक्तिवादी और सर्वव्यापी चिरन्तन प्रेम को विश्व साहित्य में स्थापित किया । यही कारण है कि उनके काव्य में शिवत्व स्वरूप ईश्वर तत्त्व की प्राप्ति हमें होती है ।

इस प्रकार आधुनिक काव्य में हमें वेदांत दर्शन के क्षेत्र में प्रस्तुत किए गए वादों एवं दर्शनों के प्रभाव परिलक्षित होते हैं । उपर्युक्त वादों एवं दर्शनों से प्रभावित प्रवृत्तियाँ हमें आधुनिक काव्यों में लक्षित होती है ।

नयी कविता ने लोक जीवन की अनुभूति, सौन्दर्य बोध, प्रकृति और उसके प्रश्नों को एक सहज और उदार मानवीय भूमि पर ग्रहण किया । साथ ही साथ लोक जीवन के बिम्बों, प्रतीकों, शब्दों और उपमानों को लोकजीवन के बीच से चुनकर अपने को अत्यधिक संवेदनापूर्ण और सजीव बनाया ।[1] लोक साहित्य के विविध अर्थ है । वह नये पहलू के साथ स्थान ग्रहण करता है । लोक साहित्य अर्थात् उन लोगों का साहित्य जो स्वयं भू है तथा सभ्यता की सीमाओं में बन्धा नहीं हैं, वह एक बरसाती नदी की तरह है, जिसके बहाव में मनुष्य सहज रूप से बह जाता है । एक लम्बे समय तक लोक साहित्य को असभ्य लोगों का साहित्य मान कर उसकी उपेक्षा की गई किन्तु अब इस युग में उसे पुनः प्रतिष्ठित किया जा रहा है ।

लोकगीत में रचयिता का निजी व्यक्तित्व नहीं होता वह लोक मानस से तादात्म्य रखता है और ऐसी निज व्यक्तित्वहीन, निर्वैयक्तिक रचना करता है कि

1– डॉ० रामदरश मिश्र – हिन्दी कविता : तीन दशक – पृ० 122, 123

समस्त लोक का व्यक्तित्व उसमें उभरता रहे । लोग उसे अपना मानने लगते हैं । लोग उसे अपने गीत कहते हैं । लोकगीत अत्यन्त महत्वपूर्ण लोकाभिव्यक्ति हैं ।

प्रकृति चित्रण की प्रवृत्ति प्राचीनकाल से ही विद्यमान है अर्थात् आदिकाल से ही वह मानव की सहचरी बनी रही है । रम्य एवं भव्य प्रकृति साहित्य को वैदिककाल से आधुनिककाल के साहित्य तक प्रमुख स्थान मिला है । चराचर सृष्टि में व्याप्त प्रकृति की नाना रूपात्मक गतिमान, विविध ध्वनिनिनादों से परिपूर्ण एवं परिवर्तनशील सृष्टि ने मानव हृदय में कुतूहल को उजागर किया तथा मानव ने विविध कार्य कलापों की छाया में प्रकृति को देखा अर्थात् शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से प्रकृति के साथ हमारा सम्बन्ध स्पंदनशील सत्ता के रूप में बना रहा है ।

आधुनिक कवियों की प्रकृति निरीक्षण - शक्ति अत्यन्त सूक्ष्म, विस्तृत और गहरी प्रतीत होती है । उसमें बिम्बविधान, मानवीकरण, दार्शनिक चेतना, रहस्य भावना, प्रतीक - विधान आदि को स्वतंत्र, महत्त्वपूर्ण एवं ध्यातव्य स्थान मिला है । आधुनिक प्रकृति निरूपण रसात्मक बोध की भूमि तक विकसित हुआ है । वह स्वतंत्र एवं संश्लिष्ट प्रकृति चित्र प्रस्तुत करता है । आज के प्रकृति - निरूपण में विषय वैविध्य भी पाया जाता है । साथ ही व्यंजनात्मकता एवं अप्रस्तुतविधान की प्रवृत्ति पायी जाती है । गांधीजी के प्रभाव से स्थानीय प्राकृतिक सौन्दर्य को महत्त्वपूर्ण स्थान मिला । पाश्चात्य साहित्य एवं शिक्षा का प्रभाव आधुनिक हिन्दी कवियों पर अधिक पड़ा । परिणामस्वरूप कुछ नूतन उन्मेष प्रकट हुए । टागोर और महर्षि अरविन्द के प्रभाव से विशिष्ट सौन्दर्य-लक्षिता और अतिमानवीयता एवं सर्वांग दार्शनिकता परिलक्षित होती है ।

गुजरात के आधुनिक हिन्दी काव्य में उपलब्ध उपर्युक्त प्रमुख कथ्यगत प्रवृत्तियों की पृष्ठभूमि की ओर केवल परिचयात्मक संकेत किया गया है । इनमें से कुछेक सोदाहरण विवेचन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन "भावपक्ष" के अंतर्गत यथास्थान किया गया है ।

भाषा, छंद, अलंकार शैली तथा काव्यरूप आदिविषयक विशिष्ट प्रवृत्तियों की सोदाहरण समीक्षा कलापक्ष एवं काव्यरूप नामक अथस्वतन्त्र अध्याय में की गई है ।